आपकी अपनी साहित्यिक पत्रिका

संपर्क भाषा भारती

samparkbhashabharati@gmail.com

वर्ष 1990 से नई दिल्ली से प्रकाशित
साहित्य-समाज को समर्पित राष्ट्रीय मासिकी,
मई–2024, RNI-50756
वर्ष-33, अंक-402 मूल्य 150/-

हिन्दी पट्टी में मोदी विरोध के स्वर...

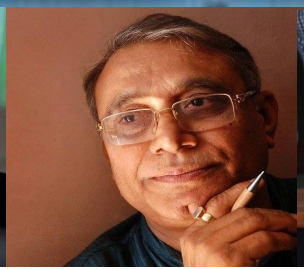

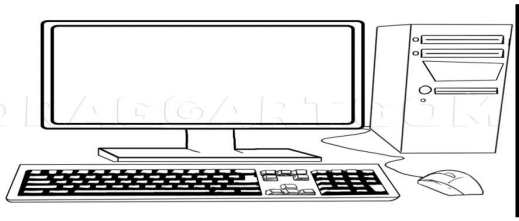

अपनी बात...

हिन्दी पट्टी में मोदी विरोध के स्वर...

प्रिय समस्त,

पूरे देश में चुनाव महोत्सव जारी है।

लोकतान्त्रिक प्रक्रिया के अंतर्गत देश को आगामी पाँच वर्षों केलिए अपनी सरकार का चुनाव करना है। जहां एक ओर निवर्तमान प्रधान मंत्री का अपने दल केलिए 400 से अधिक संसदीय सदस्य जिताने का आह्वान है तो दूसरी तरफ कई खेमों में बंटा प्रतिपक्ष उन्हें अधिनायकवादी, हिटलर, फासिस्ट कह कर अपदस्थ करने के प्रयास में है।

देश का एक पर्व है होली। होली के बारे में कहा जाता है कि उस दिन कुछ भी कहलिया जाय, उसका बुरा नहीं मानना चाहिए, "बुरा न मानो होली है।"

जो तनिक स्क्यूलर हैं और हिन्दू को धर्म विशेष का त्यौहार मानते हैं उंकेलिए इसी के समकक्ष एक दिवस तय है। पहली अप्रैल को 'मूर्ख दिवस' कह कर मनाया जाता है।

होली और पहली अप्रैल का मूर्ख दिवस इस बात का द्योतक है कि मनुष्य के झंझावाती जीवन में कुछ समय मूर्खता करने का, हंसी मज़ाक करने का भी तय होना चाहिए। भारत में आम चुनाव इन्हीं दिवसों का एक्स्टेंडेड स्वरूप है।

इस आयोजन में सरकार से लेकर प्रतिपक्ष तक सब को झूठ बोलने की स्वतन्त्रता मिली होती है।

सारे राजनैतिक दल एक से बढ़ कर एक झुट्ठाड़ की टीम बना कर पहले से ही तैयार रहते हैं। जो जितना बड़ा झुट्ठाड़ होता है उसके राजनैतिक दलों के आधिकारिक प्रवक्ता बनने के चांस अधिक होते हैं।

इन आधिकारिक प्रवक्ताओं की एक विशेषता यह भी तय की गई है कि उन्हें बे-शर्म भी होना चाहिए। मतलब यह कि चुनाव के दौरान एक दूसरे को गाली देने, गंभीर आरोप लगाने के बाद उनमें यह ज़मीर भी होना चाहिए कि अवसर आने पर ये उस पाले में भी प्रवेश पा जाएँ जिसको चुनाव के दौरान गाली देते फिरते हैं।

चुनाव एक ऐसी प्रक्रिया है जिससे देश में रहने वाला हर व्यक्ति प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। देश में रहने वालों की तो बात छोड़िए अमरीका में बैठे पित्रोदा साहब वहाँ बैठे-बैठे अपनी खुजली नहीं रोक पाते।

इसी चुनावी मौसम में कुछ पत्रकार, कुछ साहित्यिक किस्म के लोग भी जो खुद को आचार्यत्व की डिग्री दिये बैठे होते हैं, कीचड़ में कूद पड़ते हैं.... "बुरा न मानो चुनाव है।"

आप जानते हैं हिन्दी में पत्रकारों की क्या स्थिति है।

पगार 30 से 40 हज़ार मिल जाये तो भली। वैसे सब को क्रान्ति का पाठ पढ़ा आएंगे पर खुद विरोध जताने में नपुंसक हैं, जाने कब अखबार से निकाल दिये जाएँ।

हिन्दी के साहित्यकार तो और अधिक वनरेबल हैं कल ही श्री विष्णु नागर जी को पढ़ रहा था। श्री विष्णु नागर जी धुर वामी खेमे हैं। सर्वहारा वर्ग को क्रान्ति का उपदेश देते मिलेंगे। हर ज़ोर जुल्म की टक्कर में संघर्ष हमारा नाड़ा है।, इस आस्था में यकीन रखते हैं। मतलब नाड़ा का मतलब है, इज्ज़त। अगर नाड़ा ही खुल गया तो? खैर, आप लिख रहे थे कि आपने पचास से अधिक पुस्तकें लिखीं हैं पर केवल दो प्रकाशकों ने बहुत कहने के बाद उन्हें कई वर्षों की इतनी रॉयल्टी प्रदान की है कि उससे घर का महीने भर का राशन तक नहीं आ सकता। तो यही वनरेबल

संपर्क भाषा भारती : प्रधान संपादकीय कार्यालय : सुधेन्दु ओझा (संपादक), ग्राम : मकरी, पोस्ट भुइंदहा, पृथ्वीगंज, प्रतापगढ़-230304
पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा।
प्रकाशक, मुद्रक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, दिल्ली पत्र व्यवहार का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली110092

साहित्यकार फेसबुक पर जी-जान से अपनी सरकार बनवाने के प्रयास में लगे रहते हैं ताकि आने वाले कुछ समय तक उन प्रदेशों की साहित्य अकादमियों में पान का बीड़ा हासिल करते रहें जहां इनकी सरकारें बनें।

तो आइये देखते हैं फेसबुक पर अल्ट्रा-सक्रिय कुछ मोदी विरोधी आलेखों को.....

- आई टी सेल से जुड़े मूर्ख रचें इक झूठ ..!

फिर विद्वानों में मचे उसी झूठ की लूट . .!!

- चुनाव के दिनो में नेता को सबसे बड़ा फायदा ये मिलता है कि उसके दिमाग में जो भी गंदगी भरी हो.. जो भी कचरा जमा हो.. जो भी विकृति हो..
- जितना भी झूठ और घृणा भरी हो.. वो विपक्षी दल के बहाने से बाहर परोस सकता है .. और इस तरह उसके अंदर जितनी मूर्खता हो.. उसके लिए वरदान बन जाती है
- मुंह जो खोला तो गालियां देगा..!

उसकी फितरत ही बदजुबानी है .. !! (Laxmi Shankar Bajpai— 25 April at 03:02)

- पी. चिदंबरम का कॉलम दूसरी नजर: कांग्रेस के घोषणापत्र का पुनर्लेखन

कांग्रेस को प्रधानमंत्री के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करना चाहिए कि उन्होंने लोगों को यह सब बताया कि अगर भाजपा (मोदी साहब के नेतृत्व में) तीसरी बार जीतती है, तो किस तरह की विकृतियों, झूठ और दुर्व्यवहार की उम्मीद की जा सकती है।

Written by पी. चिदंबरम | Edited by Bishwa Nath Jha

नई दिल्ली April 28, 2024

अभूतपूर्व सहयोग और सद्भाव का परिचय देते हुए, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्वेच्छा से कांग्रेस के घोषणापत्र के पुनर्लेखन और अपने अंदर के विचारों और चिंतन को जाहिर करने का दायित्व अपने ऊपर ले लिया। उनका मानना है कि इससे राजनीतिक विमर्श समृद्ध होगा। गुजरे हफ्ते जो कुछ हुआ, उसकी मैं यही सबसे उदार व्याख्या कर सकता हूं।

इस बयान के पीछे एक दिलचस्प कहानी है। 14 अप्रैल को, जब भाजपा का घोषणापत्र जारी किया गया, तो करीबी राजनीतिक पर्यवेक्षकों ने नोट किया कि भोलेभाले राजनाथ सिंह की अध्यक्षता वाली समिति द्वारा तैयार किए गए भाजपा के उस दस्तावेज से मोदी साहब खुश नहीं थे। समिति ने चुपचाप स्वीकार कर लिया था कि यह किसी राजनीतिक दल का घोषणापत्र नहीं, बल्कि उस प्रतिभाशाली व्यक्ति के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन है, जिसने 'पार्टी का मूल' स्वरूप तैयार किया।

इसलिए समिति ने दस्तावेज को 'मोदी की गारंटी' कहकर उचित सम्मान दिया। हालांकि, जैसा कि मोदी साहब ने सही अनुमान लगाया था, 'मोदी की गारंटी' जारी होने के कुछ घंटों के भीतर ही बिना कोई निशान छोड़े गायब हो गई। आज कोई भी भाजपा के घोषणापत्र के बारे में बात नहीं करता, यहां तक कि मोदी साहब भी नहीं। 'मोदी की गारंटी' की आत्मा को अब शांति मिल चुकी है।

मोदी साहब न तो 'मोदी की गारंटी' को रद्दी की टोकरी में फेंक सकते हैं और न मसौदा समिति को उसकी अयोग्यता या मलिन मंशा के लिए जिम्मेदार ठहरा सकते हैं। ऐसे में, मोदी साहब ने कांग्रेस के घोषणापत्र को विशेष रूप से उठाने और उस पर अपनी टिप्पणी के साथ उसकी दृश्यता और पाठक संख्या बढ़ाने का फैसला किया। यह भारतीय साहित्य की उस महान परंपरा के अनुरूप था, जिसमें मूल कार्य से अधिक उस पर की गई टिप्पणियां महत्त्वपूर्ण होती हैं।

मोदी साहब ने कांग्रेस के घोषणापत्र की साज-सज्जा में निम्नलिखित रत्न जड़े हैं: कांग्रेस लोगों की जमीन, सोना और अन्य कीमती संपत्ति मुसलमानों में बांट देगी। कांग्रेस व्यक्तियों की संपत्ति, महिलाओं का सोना और आदिवासी परिवारों के पास मौजूद चांदी का मूल्य निर्धारण करने और उन्हें छीनने के लिए सर्वेक्षण कराएगी। कांग्रेस, सरकारी कर्मचारियों की जमीन और नकदी जब्त कर बांट देगी।

डा मनमोहन सिंह ने कहा था कि देश के संसाधनों पर पहला दावा मुसलमानों का है, और जब डा सिंह ने यह बात कही तो मैं (गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में) मौजूद था। कांग्रेस आपक मंगलसूत्र और स्त्रीधन छीन कर उन लोगों को दे देगी, जिनके अधिक बच्चे हैं। अगर आपके पास गांव में घर है और आपने शहर में भी एक छोटा-सा फ्लैट खरीद रखा है, तो कांग्रेस उनमें से एक घर छीन लेगी और किसी और को दे देगी।

सहयोगियों में प्रतिस्पर्धा

मोदी साहब के भरोसेमंद सिपाही और सलाहकार, अमित शाह ने कहा: कांग्रेस मंदिर की संपत्तियों को जब्त कर उन्हें वितरित कर देगी। राजनाथ सिंह ने यह कहकर अपना योगदान दिया कि कांग्रेस लोगों की संपत्ति हड़प कर उसे घुसपैठियों को फिर से वितरित कर देगी। अगले दिन, राजनाथ सिंह ने एक और नगीना पेश किया: कांग्रेस ने सशस्त्र बलों में धर्म-आधारित कोटा शुरू करने की योजना बनाई है।

जैसे-जैसे टिप्पणीकारों की संख्या बढ़ती गई और वे एक-दूसरे से आगे निकलते गए, मोदी साहब को पता चला कि कांग्रेस 'विरासत कर' लागू करने की योजना बना रही है और उन्होंने इस कर के खिलाफ आवाज उठाई। निर्मला सीतारमण भी इसमें कूद पड़ीं और विरासत कर के विचार में अपनी बुद्धिमत्ता का योगदान दिया। हालांकि उनकी इस अज्ञानता के लिए माफ किया जा सकता है कि संपत्ति शुल्क (एक प्रकार का विरासत कर) कांग्रेस सरकार ने 1985 में समाप्त कर दिया था और संपत्ति कर 2015 में भाजपा सरकार द्वारा समाप्त कर दिया गया था।

यह देखना मुश्किल नहीं है कि कांग्रेस के घोषणापत्र पर समन्वित

हमला क्यों और कब शुरू हुआ। 19 अप्रैल को पहले दौर के मतदान के बाद पीएमओ और भाजपा में घबराहट फैल गई। मोदी साहब ने 21 अप्रैल को राजस्थान के जालौर और बांसवाड़ा में हमला शुरू किया और फिर रुके नहीं। उनके काल्पनिक लक्ष्यों की सूची विचित्र थी। उनके मंत्रिमंडल के सहयोगियों ने भी अंधाधुंध गोलीबारी की।

मीडिया का कर्तव्य था कि वह इस पागलपन को रोकने का आह्वान करे। मगर इसके बजाय, अखबारों ने इन विवादास्पद विषयों की 'व्याख्या' की और उन पर विद्वतापूर्ण संपादकीय लिखे। टीवी चैनलों ने 'पंडितों' के साक्षात्कार प्रसारित किए और 'पैनल चर्चा' आयोजित की। मोदी साहब द्वारा शुरू किया गया छद्म युद्ध कई गुना बढ़ गया।

उम्मीद की सूरत

पांच से 19 अप्रैल के बीच कांग्रेस का घोषणापत्र पूरे भारत में सबसे ज्यादा चर्चा का विषय बन गया था। उसमें किए गए निम्नलिखित वादों ने लोगों के मन पर गहरी छाप छोड़ी थी। सामाजिक- आर्थिक और जाति सर्वेक्षण; आरक्षण पर 50 फीसद की सीमा समाप्त करना; मनरेगा श्रमिकों को 400 रुपए दैनिक मजदूरी; सबसे गरीब परिवारों के लिए महालक्ष्मी योजना; कृषि उपज के लिए एमएसपी की कानूनी गारंटी; कृषि ऋण माफी पर सलाह देने के लिए एक आयोग की नियुक्ति; युवाओं के लिए शिक्षुता यानी अप्रेंटिशशिप का अधिकार; अग्निवीर योजना की समाप्ति; बकाया शिक्षा ऋणों की माफी; और

केंद्र सरकार में 30 लाख खाली पदों को एक साल में भरने का वादा।

तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने जब कांग्रेस के घोषणापत्र को 'लोकसभा चुनाव का नायक' बताया, तो वे निशाने पर आ गए। इससे मोदी साहब अवश्य आहत हुए होंगे, उन्होंने दस्तावेज को खलनायक के रूप में चित्रित करने का फैसला किया। मगर उनका दुर्भाग्य क कांग्रेस घोषणापत्र के किसी भी हिस्से को गलत नहीं ठहराया जा सका। इसलिए, मोदी साहब ने एक भूत द्वारा लिखे गए घोषणापत्र की कल्पना की और उसे रद्दी की टोकरी में डालने का फैसला किया। मेरे विचार से, यह एक भाजपा प्रधानमंत्री द्वारा कांग्रेस के वास्तविक घोषणापत्र को दी जाने वाली सर्वोत्तम आदरांजलि है!

कांग्रेस को प्रधानमंत्री के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करना चाहिए कि उन्होंने लोगों को यह सब बताया कि अगर भाजपा (मोदी साहब के नेतृत्व में) तीसरी बार जीतती है, तो किस तरह की विकृतियों, झूठ

और दुर्व्यवहार की उम्मीद की जा सकती है। घोषणापत्रों को दुबारा लिखने में कामयाबी हासिल करने के बाद, नरेंद्र मोदी भारत के संविधान को फिर से लिख सकते हैं।

•

मैं सोच रहा था कि सैंगोल फिर उन्हीं के हाथ में रहेगा। तीसरी बार भी। झंडे-डंडे से तो यही लग रहा था। भगत निकल आये थे। खूब जयजयकार हो रही थी। मंदिर से लेकर दफ्तर तक खूब मजमा था। अनेक महारथी शंख, चक्र, गदा लिये घूम रहे थे। दिग्विजय के लिए। अश्वारोहियों की गिनती करना मुश्किल था। डंका बज रहा था। लेकिन पहले चरण में कुछ अश्व बिदक गये। इधर-उधर भागने लगे। कुछ अपनी नादों से निकले ही नहीं। जो हिनहिनाहट चारों दिशाओं में महानाद बनकर बज रही थी, उसमें यकायक कमी आ गयी। अब तो उनकी लगामें भी अश्वारोहियों के हाथ से छूट गयी है। कुछ महारथियों को उनके ही अश्वों ने जमीन पर गिरा दिया है। वे चीख रहे हैं। डर बढ़ा है तो आवाजें तेज हो गयी हैं। घायल होने पर जो दयनीयता आती है, वह भी दिखायी पड़ रही है। उसे छिपाने की कोशिश भी साफ नजर आ रही है। इस महाभारत के परिणाम को लेकर व्यास भी अभी असमंजस में हैं लेकिन जिस तरह अचानक छल, कपट और दंभ का स्वर बढ़ा है, उससे 'संजय' का आकलन थोड़ा डगमगा गया है। वह अभी कहना नहीं चाहता लेकिन तूफान में घिरी राजसत्ता का मोह, छद्म और पराभव की आशंका से उपजा क्रोध किसी अनहोनी का संकेत दे रहा है। जय हो प्रजा की, क्षय हो अन्याय की। जय हो सत्य की, क्षय हो झूठ की। हे! कृष्ण, तुम्हारा पांचजन्य कहां है? बजाओ इस बार निष्पक्षता से। छल मत करना किसी के पक्ष में। वह देखो, बादलों में छिपा सूर्य धीरे-धीरे बाहर आ रहा है। करो शंखनाद। कोई गड़बड़ मत करना, नहीं तो समर भूमि को घेरे खड़ी प्रजा तुम्हारे हाथ से छीन लेगी महाशंख। उसके हाथ किसी बड़े धोखे से बांधे नहीं गये तो इस बार वह कोई नया सुर बजाना चाहती है।

• सियाराम मय सब जग जानी

अब न रही कोई हैरानी
सियाराम मय सब जग जानी
इक राजा की बची कहानी
सियाराम मय सब जग जानी
भारी सब पर इक तूफानी
सियाराम मय सब जग जानी
लिखना-पढ़ना सब बेमानी
सियाराम मय सब जग जानी
गाओ मिल अब भजन मसानी
सियाराम मय सब जग जानी
आजादी की बात पुरानी
सियाराम मय सब जग जानी
याद सभी को आये नानी
सियाराम मय सब जग जानी
छापे, जांच और मनमानी
सियाराम मय सब जग जानी

हम सब कुछ दिन के सैलानी
सियाराम मय सब जग जानी
इधर ढहाना, उधर ढहानी
सियाराम मय सब जग जानी
गये अगर की आनाकानी
सियाराम मय सब जग जानी
लोकतंत्र की खत्म कहानी
(सुभाष राय)

आज 'जनसंदेश टाइम्स' और 'सबलोग' में
विपक्ष के नेता मोदी को पराजित करने के लिए अगर जनता का साथ चाहते हैं तो उन्हें उन मुद्दों पर खुद को केन्द्रित करना चाहिए, जिन पर आम जनता उनसे सहमत हो सकती है, जो आम जीवन का भी कटु सच है। लेकिन दुर्भाग्य यह है कि समूचा विपक्ष उस मुद्दे पर मोदी से मुखातिब है, जिस पर उसके तर्कों को स्वीकार करने के लिए बहुसंख्य लोग तैयार नहीं। कोई हनुमान का मंदिर बनवा रहा है, कोई राम का, शिव का। कोई त्रिपुंड लगाकर, मोटा जनेऊ पहनकर खुद के हिंदुत्व का प्रदर्शन कर रहा है, कोई बाबाओं को बुलाकर उनका स्वागत अभिनंदन कर रहा है। 2014 से लगातार हमने देखा है कि भाजपा के सामने विरोधियों के ये करतब- तमाशे कभी काम नहीं आये। आगे भी नहीं आने वाले हैं। युद्ध में कहां मुखर होना है, कहां चुप रहना है, यह आना चाहिए। अगर यह नहीं आता तो पराजय को टालना बहुत मुश्किल होगा। भारतीय मन को समझे बिना यह रणनीति बनायी नहीं जा सकती। राम के बारे में, मंदिर के बारे में, संस्कृति के बारे में मोदी का प्रतिकार करते ही आप संदेहास्पद हो जाते हैं। मोदी और भाजपा ने जो जनविश्वास अर्जित किया है, अगर उसका आधार झूठ भी हो तो भी वह आस्थालु मन में एक सच की तरह. बैठा हुआ है। धर्म के नाम पर भारतीय मन तमाम गल्प, मिथ और कल्पनाओं से लद-फद है लेकिन करोड़ों लोग उसे ही पीढ़ियों से सच मानते आए हैं। हमने लोगों को थालियां बजाते देखा है, बिना पर्व के दीवाली मनाते देखा है, आज भी देख रहे हैं। इसे विश्वास का परिणाम कहें या अंधविश्वास का, पर यह आज का एक कड़वा सच है।
भारतीय जनता पार्टी कोई समाज सुधार में विश्वास नहीं करती, यह उसका उद्देश्य भी नहीं है, वह राजनीतिक सत्ता हासिल करना चाहती है। इसलिए वह यथास्थितिवाद को और जड़ीभूत करने में जुटी रहती है, वह मृत परम्पराओं, कर्मकांड और विश्वास की जमीन पर अपनी फसल काटना चाहती है। वह इसमें सफल इसीलिए हो रही है क्योंकि पहले से ही लोकमन कुछ इसी तरह की जमीन पर खड़ा है। इन 10 वर्षों में उसे इस काम में बहुत कामयाबी मिली है, उसके अनवरत हाहाकार को अबाध जयजयकार मिली है। अगर विरोधी इसी दलदली जमीन पर उतर कर उसका सामना करना चाहते हैं तो यह उनके लिए बहुत कठिन होगा, मारक होगा। वे किनारे होते चले जाएंगे। मंदिर अनावश्यक हो तो भी एक सच है। वह बन गया है। वर्षों से भाजपा कहती आ रही थी, भागवत, मोदी सब के सब कहते आ रहे थे कि मंदिर बनेगा और अब वह खड़ा कर दिया गया है। देश में सैकड़ों मंदिर हैं। लोग जाते हैं, दर्शन करते हैं। अधिकांश को पता नहीं होता कि किसने बनाया, क्यों बनाया। कुछ दशकों बाद इस मंदिर का सच भी यही होगा। लोग मंदिर जायेंगे लेकिन यह नहीं जानना चाहेंगे कि इसे किसने बनाया, जान भी जाएंगे तो कोई फर्क नहीं पड़ेगा। लेकिन आज का सच यही है कि मोदी और उनकी पार्टी ने कहा और कर दिखाया। आप उन्हें झूठा कहें तो कहते रहें। अगर आप सच भी हैं तो सैकड़ों झूठ और वादाखिलाफी पर अयोध्या का मंदिर भारी पड़ने वाला है। इस भारतीय मन को समझे बिना कोई भी अभियान आत्मघाती होगा। विपक्ष को यह समझना होगा कि यह उनका रास्ता नहीं है। उन्हें और विकल्पों पर गौर करना होगा। झूठ चाहे जितने बोले गये हों लेकिन मंदिर एक सच है और इस सच की सच में कोई जरूरत न भी हो तो भी इसके प्रति भारतीय मन के व्यापक स्वीकार बोध का क्या करेंगे? मोदी विरोधियों का संशय उनको कमजोर कर रहा है। वह अराजनीतिक लोक की आस्था के विरुद्ध है। मंदिर जाना लेकिन मंदिर बनाने के लिए मोदी की आलोचना करना, राम की छवि को स्वीकार करना लेकिन मोदी के नाम पर राम के विरुद्ध खड़े दिखना, दोनों एक साथ सधने वाला नहीं है। मोदी से लड़िये लेकिन उनसे लड़ते-लड़ते राम से लड़ने लगना आज के युद्ध में जीत मुमकिन नहीं कर सकेगा। (लेख का एक अंश)

@@@@@@@@@@@@@@@@@@@@@@@@@@

Subhash Rai

· 22 January ·

राम! तुम तो जानते ही हो कि पहले कर्मकांड की राजनीति ने लोगों को तुमसे दूर किया, अब राजनीति का कर्मकांड लोगों को तुमसे और दूर ले जा रहा है।
राम! तुम तो जानते हो कि तुम न पूरी तरह सगुण हो, न पूरी तरह निर्गुण। तुम दोनों की संधि पर खड़े हो।
राम! तुम तो जानते हो कि तुम कण-कण में हो। तुम्हें कहीं जाना नहीं, तुम्हें कहीं आना नहीं।
राम! तुम तो जानते हो कि गोरख ने, कबीर ने, रैदास ने तुम्हें तब पहचाना जब वे शीश उतारे भुई धरे की मनस्थिति में पहुंच गये।
राम! तुम तो जानते हो कि हर हृदय में तुम मौजूद हो, तुम्हारे दर्शन के लिए बस हृदय के बंद कपाट खोलने की देर है।
राम! तुम तो जानते हो कि तुम न राजा हो, न राजकुमार, न अयोध्या के हो, न काशी के।
राम! तुम तो जानते हो कि तुम्हें पाने के लिए सब कुछ छोड़ना पड़ता है, सारी इच्छाएं, अभिलाषाएं, मोह, लोभ, क्रोध, सब कुछ।
राम! तुम तो जानते हो कि तुम्हें जानते ही मनुष्य सम्पूर्ण सृष्टि के प्रति, मानवता के प्रति अनन्य करुणा और प्रेम से भर जाता है।

राम! तुम तो जानते हो कि तुम्हें जानना बहुत आसान नहीं तो कठिन भी नहीं है।
राम! तुम तो जानते हो कि हत्या, धोखे, झूठ से तुम्हें हासिल नहीं किया जा सकता।
राम! जब तुम सब जानते हो तब तो तुम यह भी जानते ही होगे कि तुम्हारे नाम पर आजकल कितने निरर्थक नाटक चल रहे हैं, कितना अन्याय हो रहा है, कितने झूठ बोले जा रहे हैं।
###
Ramsharan Joshi
मेरा घोड़ा जीत गया, बिन दौड़े जीत गया..... !
भाई जीत गया रे, जीत गया.
मेरा घोड़ा जीत गया, बग़ैर दौड़े मैदान में जीत गया.
है ना घोड़ा कमाल का?
इसे न चाहिए महालक्ष्मी रेस कोर्स का मैदान ,
न चाहिए दिल्ली का पोलोग्राउंड,
चाहिए इसे न दर्शक, और न ही बिडर,
छोड़ देता है सभी घोड़ों को पीछे, बिना दौड़े ,
ईवीएम के रेस कोर्स से अदृश्य हो जाते हैं,
पराये घोड़े,
रह जाता हूं मैदान में,
मैं ही अकेला,घोषित हो जाता हूं विजेता.
हैं न कमाल!
मैं,
सूरत नस्ल का घोड़ा हूं,
चंडीगढ़ नस्ल से तगड़ा हूं.
दूंगा धोखा कभी नहीं,
मुम्बई, कोलकाता, चेन्नई, बंगलुरु, भुवनेश्वर,
मेरी चाल -दुल्लती देखिये,
कहीं भी
जीतता रहूंगा, आपको जिताता रहूंगा,
बग़ैर दौड़े,
आज़माइये,
साहेब मुझे!
साहब,
ध्यान से सुने।
ग़ैबी हाथों से थामे रहिए लगाम,
इधर-उधर करते रहिये गड्डियों कों,
चारा डालते रहिये,
बेलग़ाम जीतता -जिताता रहूंगा,
साहब!
शोर मचाने दें उनको,
वे निठल्ले, आंदोलन जीवी जो हैं,
नक्कारख़ाने में तूती की आवाज़,
कौन सुनेगा उन्हें,
आपके जयजयकार के नारों के बीच,
ओहदे पर बैठे रहें,
मदमस्त गज को चलने दें,
चीटियां रेंगती रहेंगी, पांव तले कुचलती रहेंगी,
गजराज अपनी सूंढ को बचाये रखे चीटियों से,
बस!
मैं जीतता रहूंगा..... मैं जिताता रहूंगा,
बिना दौड़े.
बस,
आप सिंहासन पर बैठे रहिए बेख़ौफ,
साहब मेरे !
आज़माइये '
बार बार मुझे,
फिर देखते रहिये कमाल मेरा.
बाज़ी मरता रहेगा,
हर दफा वफ़ादार घोडा।
जीत गया भाई, जीत गया,
बिन दौड़े जीत गया,
मेरा घोड़ा!
25.04.2024
###
बोलो,
असत्येश्वर की जय हो!
रामशरण जोशी
छुटपन में,
मां की गोद में,
सुनी थी हरिश्चंद्र -तारामती की कथा.
उसने,
घाट- कर लिए बिना,
अपने ही पुत्र को जलाने नहीं दिया था.
मुझे,
बनना नहीं है हरिश्चंद्र।
मां,
मैं हूं कलयुगी हरिश्चंद्र।
मुझे रोकड़ा चाहिए,
कोई भी दे, कैसे भी रंग का दे.
शर्त है,
होना चाहिए मटमैला।
ईश्वर नहीं है,
हॉकिंग कहता है।

पर,
असत्य का ईश्वर है,
मैं कहता हूं।
असत्य है,
मेरा धर्म।
अब इतिहास में है,
सत्य धर्म - राज धर्म।
मैं,
उंगलियों पर नचा सकता हूं इतिहास को,
मैं भूगोल बदल सकता हूं,
तक्षशिला को बिहार ला सकता हूं.
जंग रुकवा सकता हूं, सरकारें ध्वस्त करवा सकता हूं।
.
असत्य मेरा ऑक्सजीन है,
प्रभात और संध्या है, दिन+सप्ताह+महीना + बरस है।
असत्य ही बिछौना है, ओढ़ना है,
असत्य ही मेरा परिधान है,
असत्य ही रंगरेज़ है.
असत्य नहीं,
तो मैं नहीं,
मेरा अस्तित्व नहीं.
मेरा संकल्प है - 'असत्यमेव जयते'।
लोक लाज, मर्यादा तज,
असत्य संग,
रचाई है रासलीला।
असत्य ही लोकतंत्र, संविधान है,
असत्य में ही समाया है राज्य,
और
उसकी हज़ार भुजाएं और मेरा असीम वक्ष।
कोई उनसे कहदे,
बंद करें अपने सत्य और मोहब्बत की दुकानें, समेटें विचारधाराओं का जमावड़ा।
मैंने माल सजा रखा है,
रंग-बिरंगे -मोहनी मूरत के बेशुमार मॉल।
हर शहर, हर कस्बे और हर दिमागों में.
मान लो शिक़स्त अपनी,
कलियुगी हरिश्चंद्र से.
नफ़ा -ही-नफ़ा है,
भोगोगे राजपाट, खाओगे छप्पन भोग.
पवित्र, पुण्य आत्मा और ईश्वर भक्त कहलाओगे।
बस!
ब्रह्माण्ड में,
'असत्य धर्म की जयजय कार करो।
गुंजित करदो
उसे,
लजा जाएं परलोक में,
हिटलर +मुसोलिन + गोबल्स भी,
तुम्हारे शंखनाद से.
तुम्हारे चरण में त्रिलोक होंगे,
तुम सम्राट बनोगे ' असत्य लोक' के।
बोलो,
असत्येश्वर महाराज की जय !!!
असत्य धर्म की जय हो ..... असत्य धर्म की जय हो!!!
###

गिर

गिर
और गिर
गिरता जा
निचाइयां अतल हैं
गिरने का साहस तुझमें गजब है
गिर
और गिर
अबे और गिर

ओ मूर्ख
रुक मत
सांस मत ले
चड्डी गिरने की परवाह मत कर
गिर

गिरनेवाले की नंगई कौन
देखता है रे
तू तो गिर

अरे जब तूने गिरने का व्रत लिया है
तो फिर ईमानदारी से गिर
कैमरे पर गिरता हुआ दिख
गिर
और गिर

जब तक सांस है

तब तक
तेरे गिरने की
आस है
गिर

अबे ओ
और नीचे
और नीचे
और भी नीचे
गिर

तल नहीं है
मूर्ख
अतल है यह
गिरता चला जा
गिर।
(विष्णु नागर)
23.04.24
###
दिलीप तेतरबे
गोदी विज्ञापन और प्रोपरगेंडा मीडिया पर आने वाला खर्च चुनाव में बीजेपी का लगाया गया धन माना जाना चाहिए.
20.04.2024
चलो सब मिल कर
तालाशें लोकतंत्र कहाँ है?
लोक कहाँ है?
धर्म कहाँ है?
राष्ट्र के ये जीवन तत्त्व
मारे जा चुके
अग्निकुण्ड में जलाए जा चुके
लाठी है, गोली है
हत्या को कहते वह
पवित्र वध!
तुलसी के वधिक कभी
शम्बूक वध
वह लिखवाना चाहते थे
रामचरित मानस में चाहते थे जोड़ना
तुलसी ने मना किया तो
मनुवादियों के एक कवि ने
तुलसी शैली में रच दिया
कथा शम्बूक वध की
पवित्र वध की!

मनु के चेले
अब भी वध पर वध करते हैं
वधशाला से अपनी सरकार चलाते हैं
वे मात्र मनुष्य का वध नहीं करते
गरीबों वंचितों के सपनों का
तिलक लगा कर वध करते हैं
रावण ही शायद
उनका राम बना है
ऐसा न होता तो राम का लेकर नाम
किसी के कलेज़े में
छुरा नहीं उतरते ऐंठते...
यह नई हिंसक प्रजाति
इसका इतिहास आदिकाल से
लिखा पड़ा है ग्रंथों में
पहले वे थोड़ा कम क्रूर थे
अब वे अधिक क्रूर हैं
अधिक हिंसक हैं
आदमखोर हैं...
@@@@@@
18.04.2024
रंगा-बिल्ला के समर्थक रामनामी चादर में शोभा नहीं देते!

17.04.2024
मछली विरोधी बीजेपी बीफ उत्पादक कम्पनी से कड़ोरों का चंदा खाता है।
16.04.2024
वह कह रहे हैं
और कहे जा रहे हैं
आज जो कहा
आज ही भूले जा रहे हैं
"चिंता न करें,
स्वर्ग के लिए बुलेट ट्रेन
जल्द ही शुरू करूँगा
यह 'अंतिम यात्रा ट्रेन' होगी
गति उसकी तूफान सी होगी
बस उसमें
भोजन की व्यवस्था न होगी
एसी या फैन न होंगे
बैठने की कुर्सी
या सोने को बेड न होगा
टिकट पंडित जी तय करेंगे
आपके पाप पुण्य का हिसाब लगा कर!"

इस बार भी स्वर्ग के लिए
बुलेट ट्रेन न चली
और न टिकट के अग्रिम पैसे लौटे
इस बार शायद स्वर्ग के लिए रॉकेट चले
बस उसमें ऑक्सीजन न होगा
यात्रा शुरू करते ही
सारी इच्छाएँ मर जाएँगी !

18.03.2024
चले थे राम को नारा बनाने बॉन्ड बाण ने मुखौटा उड़ा दिया
17.03.2024
भ्रष्टाचार की सबसे लम्बी सूची इलेट्रोरल बॉन्ड
16.03.2024
सुना है, व्हाट्सप्प यूनिवर्सिटी के कुलाधिप्ति
नागपुर में कहीं रहते हैं
16.03.2024
गोदी मीडिया लुटेरे को बचाने के लिए जान प्राण लगाए है।
16.03.2024
गोदी मीडिया लुटेरे को बचाने के लिए जान प्राण लगाए है।
16.03.2024
बॉन्ड
राम, रहीम, आम, खास, रसोई गैस, वैक्सीन,समाज, मनुष्य, चीता, बनारस, सबको चीट किया
16.03.2024
एसबीआई भी सत्तामुखी पार्टी!
लूट का धन बॉन्ड के जरिए!
05.03.2024
मुन्तजीर राम के भक्त व्यंग्यकारों को दस बरस में कहीं महँगाई, हिंसा, बेरोजगारी... नहीं दिखी।
###

इन्हें शीघ्र ही व्यवस्थित रूप में आप किसी पुस्तक में भी पढ़ पाएंगे।

सादर,

सुधेन्दु ओझा
770-1960-982
नई दिल्ली

संपर्क भाषा भारती : प्रधान संपादकीय कार्यालय : सुधेन्दु ओझा (संपादक), ग्राम : मकरी, पोस्ट भुइंदहा, पृथ्वीगंज, प्रतापगढ़-230304

पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक, मुद्रक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, दिल्ली

पत्र व्यवहार का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली110092

लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली-110092

संपर्क भाषा भारती

संपादकीय परिवार

मुख्य संपादक : सुधेन्दु ओझा

प्रधान कार्यालय : ग्राम-मकरी, पोस्ट-भुइंदहा, पृथ्वीगंज हवाई अड्डा, प्रतापगढ़-230304 उत्तर प्रदेश

नई दिल्ली कार्यालय : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092

पत्रव्यवहार तथा पुस्तक भेजने का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092

फोन नंबर : 9868108713/7701960982

ईमेल : samparkbhashabharati@gmail.com

क्षेत्रीय कार्यालय

अंजना सवि छलोत्रे : वृन्दा, मासिक पत्रिका: सम्पादन

जी-48, फॉर्च्यून ग्लोरी, ई-8, एक्सटेंशन, भोपाल-462039 मध्य प्रदेश

फोन नंबर : 8461912125

ईमेल : anjana.savi@gmail.com

संपर्क भाषा भारती क्षेत्रीय कार्यालय के रूप में संबद्धता के लिए पत्रिकाओं का स्वागत है...

आप अपनी रचनाएँ,

गोष्ठी/सम्मान समारोह संबंधी सूचना फोटो सहित

स्वयं www.newzlens.in पर सब्मिट कर सकते हैं ...

सभी पत्रिकाएँ डाऊनलोड के लिए www.newzlens.in पर उपलब्ध हैं...

मई-2024

क्रम:	शीर्षक	लेखक:	पृष्ठ संख्या
1	संपादकीय : हिन्दी पट्टी में मोदी विरोध		2
2	कविता	रवीद्र कुमार शर्मा	15
3	लघुकथा	सीताराम गुप्ता	15
4	कविता	शशिकला त्रिपाठी	16
5	कविता	विजय कनौजिया	17
6	कविता	कुमकुम कुमारी	17
7	कविता	अनिल कुमार मिश्र	18
8	कविता	डॉ वीरेंद्र प्रसाद	18
9	कविता	रामरक्षा मिश्र विमल	19
10	कविता	बाबा कल्पनेश	19
11	कवितायें	केशव शरण	20-21
12	कविता	रवीद्र कुमार शर्मा	22
13	कविता	जय महलवाल	22
14	कविता	डॉ अखिलेश शर्मा	23
15	लघुकथा	सुमन ओबेरॉय	23
16	कविता	मैनुद्दीन कोहरी	24
17	लघुकथा	मृत्युंजय कुमार	24
18	कहानी	पद्मा अग्रवाल	25
19	कहानी	प्रेमलता यदु	30
20	कहानी	अर्चना त्यागी	36
21	कविता	आशा शैली	37
22	हिन्दी गज़लों में अङ्ग्रेज़ी के तत्व	डॉ ज़ियाउर रहमान	38
23	जौनपुर में घनश्यामपुर की यात्रा	शशिबिंदु नारायण मिश्र	47

पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक, मुद्रक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली-110092 फोन : 9868108713

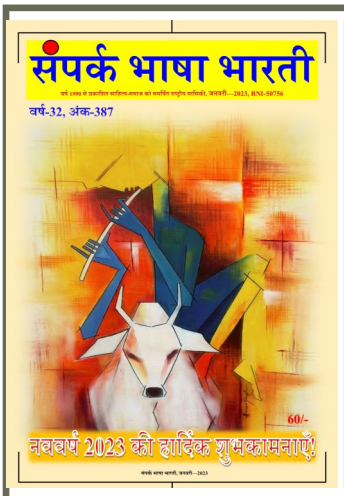

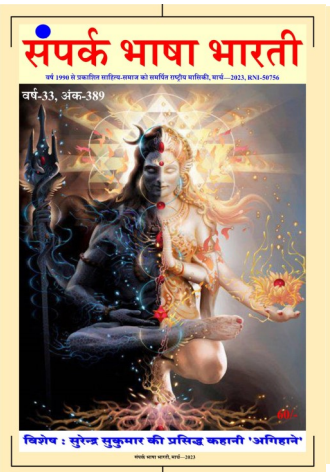

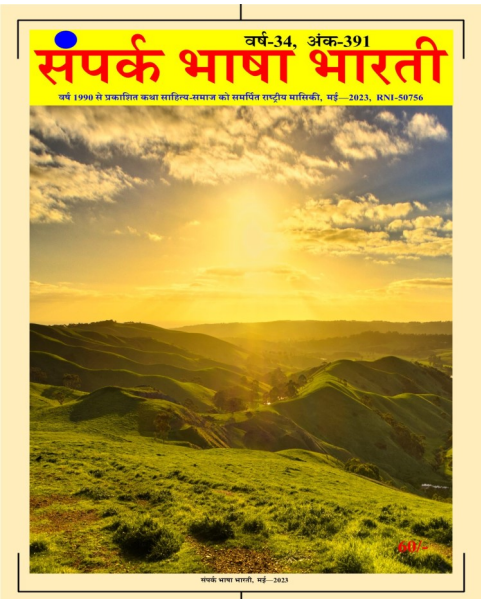

पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा।

पुस्तक समीक्षा के लिए समीक्षार्थ पुस्तक की प्रति भेजना अनिवार्य है।

प्रधान कार्यालय : ग्राम-मकरी, पोस्ट-भुइंदहा, पृथ्वीगंज हवाई अड्डा, प्रतापगढ़-230304 उत्तर प्रदेश
नई दिल्ली कार्यालय : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092

पत्रव्यवहार तथा पुस्तक भेजने का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092
फोन नंबर : 9868108713/7701960982
ईमेल : samparkbhashabharati@gmail.com

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

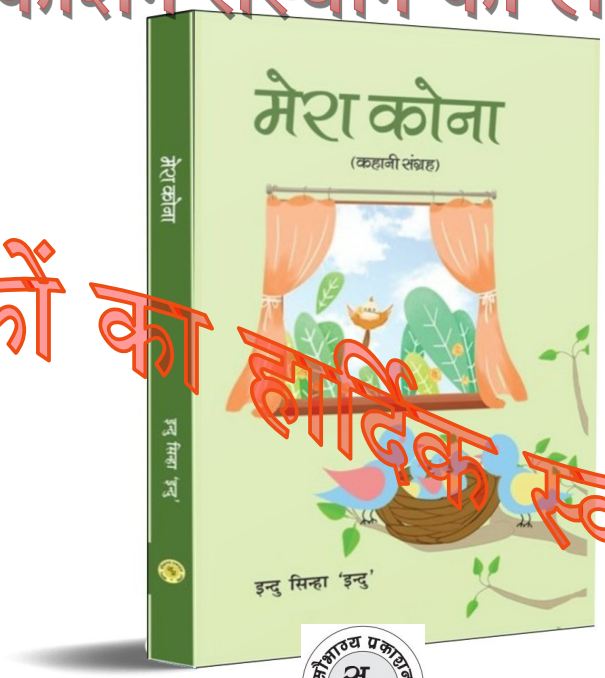

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book is Available on Flipkart

Book Name : मेरा कोना (कहानी संग्रह)

Author : इन्दु सिन्हा 'इन्दु'

ISBN : 978-81-958985-1-0

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 160

Price : 250/-

Genre : Prose /गद्य

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : **मौत और रहस्य (उपन्यास)**
Author : सुधेन्दु ओझा
ISBN : : **978-81-964179-9-4**
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 208
Price : 200/-
Genre Prose : गद्य (उपन्यास)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

आदमी का चरित्र

कैसा है आदमी कैसा उसका चरित्र
देखने में भोला भाला काम हैं विचित्र
दिमाग और सोच में भरी है गंदगी
फिर भी अपने आप को कहता है पवित्र

आदमी आदमी में फर्क है
कोई है पैसे वाला कोई है फकीर
जो भी जिसको जीवन में मिला
सबकी अपनी अपनी है तकदीर

कोई दूसरे की सेवा में रहता है खुश
दूसरों का हक मार जाता है कोई
बड़ा बनकर भी कोई जमीन से है जुड़ा रहता
सफलता मिलते ही अहंकार में डूब जाता है कोई

चेहरे की मासूमियत से किसी का पता नहीं चलता
किसी के दिल में क्या है यह तो वही जाने
काम निकल जाने पर कोई पहचानता नहीं
सामने देखकर भी बन जाते हैं अनजाने

कैसा बन गया है आदमी का चरित्र
हर तरफ है धोखा ही धोखा
ऊन निकालने की फिराक में रहते हैं भेड़ से सारे
बस मिलना चाहिए किसी को भी मौका

रवींद्र कुमार शर्मा
घुमारवीं
जिला बिलासपुर हि प्र

लघुकथा:

मिठाई का डिब्बा

जीवन में कभी ऐसा नहीं हुआ जब सुनील बाबू कभी किसी के घर खाली हाथ गए हों। शादी–ब्याह में क्या मजाल जो कोई भी मेहमान बिना मिठाई के चला जाए। ख़ुद मुख्य द्वार पर उपस्थित रहेंगे और सभी मेहमानों को आदर–मान के साथ विदा करेंगे। सुनील बाबू के इकलौते बेटे की शादी का रिसेप्शन था। भव्य समारोह आयोजित किया गया था। मेहमान खाने–पीने और नाचने–गाने में मशगूल थे। पर सुनील बाबू हस्बे–मामूल मुख्य द्वार पर डटे हुए थे। कुछ देर पहले आगंतुकों का स्वागत कर रहे थे और अब उन्हीं को विदाई दे रहे थे। उनके क़रीब ही मिठाइयों के छोटे–बड़े विविध प्रकार के डिब्बों का पहाड़–सा खड़ा था। जैसे ही कोई मेहमान जाने के लिए इजाज़त माँगता सुनील बाबू नौकर की ओर इशारा करते। उनका पुराना ख़िदमतगार राम बहादुर फौरन एक डिब्बा उठाता और सुनील बाबू को थमा देता। सुनील बाबू उसे मेहमान को सौंपते हुए उसके आने का धन्यवाद करते और झुक कर प्रणाम करते। ज्यों–ज्यों समय सरकता गया मेहमानों की वापसी में भी तेज़ी आने लगी। विदा लेने वाले मेहमानों की लाइन सी लग गई। इसी लाइन में सबसे अंत में खड़े थे जयप्रकाश जी।

सुनील बाबू के ख़ास परिचितों में रहे हैं जयप्रकाश जी और साथ ही रिश्तेदार भी हैं। उन्होंने भी जाने की इजाज़त माँगी। राम बहादुर ने उनके संबंधों के अनुसार जैसे ही मिठाई का एक डिब्बा जयप्रकाश जी को देने के लिए सुनील बाबू के हाथ में थमाया सुनील बाबू ने डिब्बे को वापस उसे देते हुए अत्यंत धीमी लेकिन स्पष्ट आवाज़ में कहा कि लोगों की हैसियत तो देख लिया कर और एक छोटा सा डिब्बा उठाकर जय प्रकाश जी को थमाते हुए आने के लिए उनका धन्यवाद किया और कहा कि भाभीजी और बच्चों को भी साथ लाते तो बड़ा अच्छा लगता! जय प्रकाश जी को बाद में कही गई बात तो नहीं सुनाई पड़ी लेकिन जो बात वो सुन चुके थे वो सब सुनने के बाद भी उन्होंने ऐसा प्रकट किया जैसे कुछ सुना ही न हो। पकड़ा हुआ मिठाई का डिब्बा उन्हें इतना भारी लग रहा था कि उन्हें अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था। उन्हें लगा कि नौकर ने छोटा डिब्बा दिया होगा इसी से उसे डाँट रहे थे और ख़ुद बड़ा डिब्बा उठाकर मुझे दिया। घर पहुँचने तक सारे रास्ते जयप्रकाश जी डिब्बे के भार और आकार में संतुलन बिठाने का प्रयास करते रहे।

सीताराम गुप्ता,
ए.डी. 106 सी., पीतमपुरा,
दिल्ली – 110034
मोबा0 नं0 9555622323

शशिकला त्रिपाठी की दो कवितायें...

(1)
संदेशखाली

अकस्मात कोई भौगोलिक नाम
अखबारों की सुर्खियों में उछलता है
फैलता है आक्रोश, दण्डित हो पिशाच
जो चिड़िया की मानिंद सर्जक स्त्री को
नोंच-नोंचकर उतारता है मौत के घाट।

उन्नाव, हाथरस, लखीमपुरखीरी हो
या दिल्ली, कोलकाता, मुम्बई, चेन्नई
बच्चियों-युवतियों का सामूहिक बलात्कार
उन्हें पेड़ पर लटकाएँ, जलाकर बना दें राख
फर्क नहीं पड़ता कामी वहशी सफेदपोश को।

मणिपुर, कोयला बन सुलगता है देशभर
जातीय हिंसा की शिकार मैती औरतों को
निर्वस्त्र दौड़ाते हुए किया जाता है छेड़छाड़
दो किलोमीटर, उनकी बहती है अँसुवन की धार
तन ही नहीं, लहू-लुहान होती है आत्मा भी।

हैदराबाद का शमशाबाद
ध्वनियों में तरंगायित होता है बार- बार
जब एक रात पशु चिकित्सक युवती बनती है
भेड़ियों के हवश की शिकार, जलाई भी जाती है
ताकि निर्दोष बने घूमते रहें भेड़िए अगले शिकार के लिए।

राजधानी दिल्ली का जंतर- मंतर
दहकता है महिला पहलवानों के विरोधाग्नि से
जो बेटियाँ विदेशों में लहराती हैं तिरंगा शान से
दुर्भाग्य से स्वदेश में ही होती हैं अपमानित शर्मसार
रक्षक बनता है भक्षक, ऐंठता है मूँछ सीना तानकर।

अनपहचाना सा संदेशखाली गाँव
वहाँ, परदेश गये बलमा की रहती हैं श्रमिक स्त्रियाँ
निडरता से बनाता है उसे कसाईबाड़ा अपराधी नेता
मानो, खूँटें पर बँधी गायें हों स्त्रियाँ
जब चाहा दुह लिया, चाहा गोकशी की।

इक्कीसवीं सदी के दशकों बाद भी
बर्बरता और साम्प्रदायिकता के बारूदी गोलों से
घायल होती रहती हैं स्त्रियाँ, भले हो नारी शक्ति-वंदन
उड़ाये लड़ाकू विमान वे, बने सीईओ, देश की प्रथम नारी
सामान्य कब बन जाय खूंखार पशु की ग्रास, उसे नहीं मालूम।

(2)
तुम! देह हो

सभ्यता- संघर्ष की कोई हो कालावधि-
सिंधु घाटी, लोथल, हड़प्पा, मोहन जोदाड़ो
आर्य-अनार्य, शक- हूण, मंगोलियन,तुर्क-यवन, मुगल
ब्रिटिशराज या फिर उत्तर उपनिवेशकाल
संक्रान्ति के हर मोड़ पर स्त्री की छिलती है
त्वचा और आत्मा, भले चुप हो इतिहास।

वेद-उपनिषद के मंत्र, लीलाधर की लीलाएँ
और बुद्ध-महावीर के उपदेश से भी
नहीं बना समाज अहिंसक,न मिल सकी स्त्री को गरिमा
महाभारत से आजतक होता रहा है उसका मानमर्दन
धर्म हो कोई और उसके रंग कितने भी हों शोख।

विडंबना यह कि द्रौपदी के चीरहरण के गवाह
बनते हैं भीष्म पितामह, कृपाचार्य, धृतराष्ट्र
और पाँच- पाँच पति भी, जो थे योद्धा महान
बिलखती गुहार लगाती है कृष्ण को ही भरे सभागार में
चीर न खींच सका दुर्योधन और बच गई लाज उसकी।

इक्कीसवीं सदी के मानुष मनाते हैं जश्न
चन्द्रयान 3 जब पहुँचता है चाँद पर
लिखा जाता है भारत का नवल इतिहास
उस वक्त भी हम सह रहे हैं अनर्थ चुपचाप
सहस्त्रमुखी दुःशासन सर्वत्र करता रहता हैअट्टहास।

बेखौफ हैवान द्वारा कूँच कूँचकर
मार दी जाती वह व्यस्ततम पथ पर
तोड़कर हाथ-पैर जलाई जाती है तंदूर में
नचाई जाती है निर्वस्त्र लबे सड़क पर
मगर, भीड़ का नहीं खौलता रक्त,न फड़कती हैं बाँहें
बंगाल, कश्मीर मणिपुर हो या दिल्ली, मुम्बई
हिंसा की प्रयोगशाला में स्त्री देह की ही होती है चीरफाड़।

अभिनंदन बारंबार करूं

योगदान तुम भी कर दो
मैं कब तक अब प्रयास करूं
चलो रूठना अब छोड़ो
मैं कब तक अब मनुहार करूं.।।

ये पहल सफल यदि हो जाए
संबंध मधुर हो जाएंगे
तुम भी कुछ कदम बढ़ाओ अब
मैं कब तक अब तकरार करूं.।।

जीवन में अनबन से अक्सर
संबंध मधुर मिट जाते हैं
गलतियां चलो मेरी ही थीं
अब बोलो क्या स्वीकार करूं.।।

तुमने ही अपनापन देकर
मुझको ज़िद्दी कर डाला था
अब चलो भुला दो भूल हुई
तुमको अर्पण सम्मान करूं.।।

सुमधुर स्वप्न अब बुनते हैं
स्वीकृति तुम्हारी हो जाए
स्वीकार चलो अब कर भी लो
अभिनंदन बारंबार करूं.।।
अभिनंदन बारंबार करूं.।।

~ विजय कनौजिया

ग्राम व पत्रालय-काही
जनपद-अम्बेडकर नगर-224132 (उत्तर प्रदेश)
मो0-9818884701

करना होगा कर्म महान

यूं ही नहीं किसी को, दुनिया में पूजा जाता।
महादेव बनने को, हलाहल को पिया जाता।।
चाहत है यदि तेरी, मिले तुमको भी सम्मान।
हे नर सुनो तुमको, करना होगा कर्म महान।।

औरों के आसरे जो, बैठे रह जाते हैं।
पाते नहीं मंजिल को, भीड़ में खो जाते हैं।।
चाहते हो यदि तुम भी, कुछ कर दर्शाने को।
तो दौड़ो जी जान से, खुद को अजमाने को।।

होते हैं जो कायर, वो किस्मत को रोते हैं।
मानव जन्म पा कर भी, उसे यूँ ही खोते हैं।।
करना है यदि तुमको, जिंदगी को सफल अपना।
तज करके आलस को, पड़ेगा अग्नि में तपना।।

लहरों से घबराकर, जो पीछे हट जाते हैं।
जरा पूछो उनसे तुम, क्या मोती पाते हैं।
पाना है यदि तुमको, दुनिया में ऊँचा स्थान।
ऐ नर सुनो फिर से, करना होगा कर्म महान।।

कुमकुम कुमारी 'काव्याकृति'
मुंगेर, बिहार

माँ

माँ
तुम स्त्री मत बनना
हमेशा दूर रहना आधुनिक स्त्रीत्व से
ताकि तुम्हारे अंदर मातृत्त्व हमेशा
जीवित रहे
हमेशा अपनी अलग पहचान रखना
उस स्त्रीत्व से
हाँ,
वही स्त्रीत्व जो खूब फल फूल रहा है
संयुक्त परिवारों में
घर की चहारदीवारी के भीतर।
माँ! तुम अपनी शक्ति पहचानो,
तुम्हें विचलित करेंगे
घर के लोग
अपने स्वार्थ की पूर्त्ति हेतु
तोड़ देंगे तुम्हारी साँस-साँस
नस-नस
पर तुम मातृत्त्व पर,
माँ की ममता पर
आँच मत आने देना
तुम स्त्रीत्व से दूर
मातृत्त्व की परिधि के अंदर ही रहना
जहाँ तुम्हारे कानों तक
अपनो के भी
मुख और मन से उगले गये ज़हर
पहुँच ना पाएँ
और तुम्हारा मन हमेशा
समदृष्टि के साथ
'माँ' होने पर गर्व करे
'स्त्री' होने पर नहीं।

अनिल कुमार मिश्र
राँची, झारखंड, मो -7858958537

ख्वाबों में देखा है

सोना, तुमको ख्वाबों में देखा है
राधे कृष्णा की किताबों में देखा है।
तेरी पलकों का झपना, फिर खुलना
निमिष नयन, फिर उसका मिलना।
तेरा हर नूर इबादत में देखा है
सोना, तुमको ख्वाबों में देखा है।।

तुमुल तरंगों की तुम तरणी
मधु मकरंद धवल की धरणी।
तेरे ताप प्रखर, अजाबों में देखा है
सोना, तुमको ख्वाबों में देखा है।।

अनियारे नयन के तारे द्वय
विशिख चपल नर्तन निर्भय।
तेरी नीरवता, महताबों में देखा है
सोना, तुमको ख्वाबों में देखा है।।

व्योम-व्योम है गान तुम्हारा
विद्यमान अनमृत दान तुम्हारा।
तेरा वरद, सिताबों में देखा है।
सोना, तुमको ख्वाबों में देखा है।।

डॉ. वीरेंद्र प्रसाद
राजवंशी नगर, पटना बिहार

गजल

कहां तक भीत बालू की उठाते चल सकोगे तुम
रुको अब तो, नहीं तो हाथ मलते ही रहोगे तुम

गरीबी जन्म लेती फाइलों में बंद आँखों से
यथारथ को इमेजिन कब तलक करते रहोगे तुम

अपाहिज कल्पना विश्वास बन तैयार रक्षण को
शरम के घोल में भींगे पड़े कब तक छुपोगे तुम

बनाते हैं चलो इक झोपड़ी गंगा किनारे पर
जहर से मनुजता कब तक सुखाते ही चलोगे तुम

विमल खटकें सबों को, भाग्य में उनके लिखा है यह
स्वयं की दृष्टि में गिरते खटकते क्यों रहोगे तुम

रामरक्षा मिश्र विमल

वंदन करूँ

जगत कष्ट टारो हे, बावन हरे।
हृदय सुख-शाँति पाए, दुःख विखरे।।

हे जीवन के कर्ता, मौन बिनती।
धर्म शील में युग-युग, करे गिनती।।

नहीं कभी लय टूटे, संबल जगे।
तेरा यशस गान हो, भव भय भगे।

इच्छा यह पूरी कर, वंदन करूँ।
चरण की धूल लेकर, चंदन धरूँ।।

जीव जगत को दृग दे, दर्शन मिले।
लहराए हृदय ताल, पंकज खिले।।

बाबा कल्पनेश

चुनावी युद्ध

शुरू चुनावी युद्ध हो रहा, वीर छंद अब हो साकार।
बिगुल बज गया है दिल्ली का, करना त्वरित निरूपण सार।।

घर-घर गांव-नगर-गलियन में , बिछी हुई शतरंजी चाल।
जहाँ खड़े दो चार आदमी, वहीं पहुँच जाता बैताल।।

शुरू चुनावी स्वर हो जाता, अपने आप बजे हर गाल।।
किसकी-किसकी ? दावेदारी, कौन ? झटक लेगा जयमाल।।

कोई दल तो बाहुबली को, जोड़ रहा है अपने साथ।
छल-प्रपंच से भरे हुए जो, जोड़ रहे हैं वे भी हाँथ।।

छत्तिस अब तिरसठ बन उभरा, प्रबल जीत का दावेदार।
दिल्ली की कुर्सी पा जाए, गले महक पाए गलहार।।

मोदी-मोदी भारत बोले , खोज विपक्षी मोदी-काट।
गौड़ हुए मुद्दे अब सारे, लाल कमल ही प्रश्न विराट।।

राष्ट्र छितिज पर उभरा देखे, अप्रमेय है एक सवाल।
भारत-ताल कमल बिन करना, सभी विपक्षी ठोंके ताल।।

अपनी संस्कृति अपनी भाषा, कैसे ? हों अपने खुशहाल।।
यह चिंता भारत की भारी, खोजे हल हो वही निहाल।।

कहे लेखनी जनमत पाए, वीर वही घोषित हो जाय।
जय गणेश जय गिरा भवानी, गगन ओर लख रही मनाय।।

जनता है बहुरही न पागल, बाहर देगी उसे निकाल।
क्षेत्रवाद या जातिवाद में, चाह रहे जो चढ़े उबाल।।

आँख गड़ाए विश्व देखता, भारत की जनता गुणवान।
पढ़-लिख कर हैं सजग हुए सब, चाह रहे संस्कृति जयगान।।

कल्पनेश जनता यह चाहे, मोदी नायक हों हरहाल।
यही चतुर्दिक शोर हो रहा, पंकज खिल लहराए ताल।।

बाबा कल्पनेश
सारंगापुर, दाँदूपुर वाया नैनी, रीवारोड-प्रयागराज , पिन -212111

कविताएँ : केशव शरण

फावड़ा चलाता श्रमिक

तर है श्रमिक
धूप में
फावड़ा चलाता
उसके हिस्से
श्रम का भी स्वेद
और सूर्य से उत्पन्न पसीना भी
कम गरम नहीं है चैत का महीना भी

नये, नरम पत्तों से निकली
नम, शीतल हवा
हमारे ऊपर इस पीपल की
क्या उसको लगती होगी?

बुलबुल

मैंने जब से
बुलबुल को गाते पाया है
उसे अपने आँगन के सब्ज़े पर
घोंसला बनाते पाया है
मैं बहुत ख़ुश और रोमांचित हूँ

ऐसी ख़ुशी और ऐसा रोमांच
अपना घर बनवाते हुए भी न पाया था
बल्कि रो दिया था तब

शहर में कोयल

कोयल के पास
कोयल की भाषा है
कोयल की भाषा में ही
कोयल से बात कर सकते हो
कोयल की भाषा
जंगल की भाषा है
वह पिंजरे में भी
कू-कू ही बोलेगी
वह तोता नहीं है कि
संस्कृत का श्लोक बोले
और कहे राम-राम
सवेरे-शाम
तुम्हारे साथ

जंगल की भाषा
नैसर्गिक आज़ादी की भाषा है
वह एक गाती भाषा है
जिसके गीत सुनाने
कोयल जंगल से
गाँवों में जाती है
शहरों में आती है

ख़ुशगवार मौसम

पेड़ गिरते हैं
खम्भे गिरते हैं
दीवारें गिरती हैं
कहीं तो पुल भी गिरे हैं
यूँ टकराए हैं तूफ़ानी हवा के झकोरे

भूनता हुआ मौसम
औंसाता हुआ मौसम
ऐसे ही ख़ुशगवार नहीं होता
ओले गिरते हैं
बिजलियाँ गिरती हैं
विपत्तियाँ गिरती हैं
जैसे नीम की पत्तियाँ और आम के टिकोरे

पर हर हाल में
हमें चाहिए
एक ख़ुशगवार मौसम
पुरबहार जीने के लिए

कविताएँ : केशव शरण

वे फूल

किसान उन्हें बोते नहीं
माली उन्हें लगाते नहीं
पुजारी उन्हें चढ़ाते नहीं
जोड़े उन्हें
भेंट नहीं करते
एक-दूसरे को
जिन फूलों में
इतनी ख़ुश्बू नहीं होती
कि वे साँसों को
ख़ुश्बू से भर दें

वे खिलते रहते हैं
बस्तियों की
ख़ाली ज़मीनों पर
या बस्तियों के बाहर
मगर उनमें इतनी तो
होती ही है ख़ुश्बू
कि सुगंधित कर दें
पुष्प-प्रेमी की दृष्टि

दिल और नदी

दिल में
हिलोर नहीं उठ रही है
वह नदी में भी नहीं उठ रही है
काफ़ी समय से नहीं उठ रही है

ज़ाहिर है कि दिल दुखी है
ज़ाहिर है, नदी दुखी है

दिल का दुख
नदी को बताना नहीं पड़ेगा
नदी का दुख
किसी को बताना नहीं पड़ेगा

दुनिया क्या कर रही है
नदी के दुख में
कि दिल
अपना दुख बताए!

वाराणसी
9415295137

अच्छी शिक्षा करे कल्याण

संस्कारों के बिना है जो समाज
बड़े छोटों की जो करता नहीं लिहाज़
भूलता जा रहा अपने सब रीति रिवाज़
उसी को कहते हैं शिक्षा विहीन समाज

जो पढ़े लिखे होकर भी करते हैं अहंकार
बात बात पर लोगों का करते हैं तिरस्कार
रिश्तों की जिनको नहीं कोई परवाह
हर वक्त रहते हैं घमंड के घोड़े पर सवार

एक दूसरे को लगे रहते हैं गिराने में
बढाते नहीं हाथ किसी को उठाने में
उम्र लग जाती है सारी रिश्ते बनाने में
उन्हें तो शर्म आती है रिश्ते निभाने में

ऐसी शिक्षा पर क्यों करें हम गुमान
जो अच्छे बुरे में नहीं कराती पहचान
बड़ों और बुजुर्गों की नहीं सिखाती इज़्ज़त मान
अच्छी शिक्षा वही जो करती सबका कल्याण

रवींद्र कुमार शर्मा, घुमारवीं
जिला बिलासपुर हि प्र

हां मैं डरता हूं

बिन मतलब के रिश्ते ढोने से,
किसी अपने के खोने जाने से,
किसी के दिल को चोट पहुंचाने से,
हां मैं डरता हूं।
किसी को जल्दबाजी में अपना बनाने से,
अपना बना के किसी को छोड़ देने से,
किसी के अरमानों के साथ खेलने से,
हां मैं डरता हूं।
अपना बनाके धोखा देने वालों से,
अपना उल्लू सीधा करने वालों से,
हर जगह अपनी ही बात मनवाने वालों से,
हां मैं डरता हूं।
दूसरों का घर बिगाड़ने वालों से,
बातों से दूसरों को बहकाने वालों से,
जले पर नमक छिड़कने वालों से,
हां मैं डरता हूं।

डॉक्टर जय महलवाल (अनजान)
प्रोफेसर कॉलोनी
राजकीय महाविद्यालय बिलासपुर हिमाचल प्रदेश

चाटुकारिता गूढ़ मंत्र है

वज़ह हो तब भी गुस्सा मत करो
अपने आप को मृत सम्मत करो

ज़माने की रीति निभाओ
उठा - पटक , फितरत करो

चापलूसी, चाटुकारिता गूढ़ मंत्र हैं
इन्हें अपनाकर स्वयं को सहमत करो

जहां पावर और मनी परिलक्षित हो
वहां पूर्ण समर्पण कर दंडवत करो

भीड़ का मूड और हसरत देखकर
गुप्त इशारे बंदी से कसरत करो

डॉ. अखिलेश शर्मा

23, अंबिकापुरी,
मेन 60 फीट रोड़ इन्दौर 452005

लघुकथा :

जीवन चक्र का दर्शन

वह अमेरिका में बहुत सफ़ल व्यवसायी हैं। माँ की मृत्यु हुई, छोटे भाई द्वारा सूचना मिलने पर बहुत मुश्किल से समय निकाल कर भारत आया।

अंतिम विदाई के सारे क्रियाकलाप वह निर्लिप्त भाव से देख रहा था।उकता कर उसनें पंडित जी से कहा कि जल्दी करिए मुझे अमेरिका वापस लौटना है। पंडित जी नें थोड़ा सख्त स्वर में कहा कि अंतिम विदाई है, विधी-विधान से सारा कार्य करना होगा, समय तो लगेगा।

वह चिढ़ कर बोला, "आप ही नें तो अभी प्रवचन दिया कि यह काया अब मिट्टी बन गई है,इस का अर्थ ही समाप्त हो गया है तो इस पर समय क्यों नष्ट किया जाए।" उसनें नोटों की गड्डी पंडित जी के हाथ पर रखी और आदेश दिया कि जल्दी काम निपटाया जाए।

पंडित जी कभी हथेली पर रखे पैसों को देखते और कभी उनको। वह समझ नहीं पा रहे थे कि इस व्यक्ति को जीवन चक्र में निहित दर्शन समझ में आ गया है या यह जीवन चक्र में ही उलझा हुआ है।

सुमन ओबेरॉय

10, त्रिलोचन नगर, भोपाल-462039
मो.नं 6268077933

उनकी हयात का असर

मेरे दिल मे आज ये तूफान सा क्यों है ।
उनकी हयात में दस्ता-बस्ता होने का असर है ।।

मैंने समझने की लाख कोशिश भी की है ।
ये सब उनके हुश्न-ओ-जमाल का असर है ।।

उनके अखलाक सूरत-ओ-सीरत की तासीर ने ।
ना समझ पे कहर बरपा होने का असर है।।

हम समझ कर भी ना समझ कैसे हो गए ।
ये उनकी इनायत के जखीरों का असर है।।

रूह को शुकून मिलना ही तो इबादत है।
चिलमन से नजरें उठा के गिराने का असर है ।।

पाक दामन-पाक रूह, ये खुदा की नेअमत है ।
ये ईनाम तो उनके सब्र की कयादत का असर है ।।

होठों पे अल्फ़ाज़ तक कहने को नहीं उनके ।
ये तो सब उनकी पाक मुहब्बत का असर है।।

मैनुद्दीन कोहरी

मॉर्निंग टी

'अजी, उठिए न। आज आपके हाथ की बनी चाय पीनी है। बहुत दिनों से आपके हाथ से बनी चाय नहीं पी है' -रूपा ने कंबल के अंदर से विकास को हिलाते हुए कहा। 'ओह!अरे यार! संडे है। सोने दो। तुम खुद बना लो'-विकास ने अधजगे अवस्था में जवाब दिया। 'ओ माय डार्लिंग, प्लीज़'- रूपा ने प्यार से कहा। 'ओह हो! तुम भी न। चलो बनाता हूं'- विकास ने बिस्तर से उठते हुए कहा।

फ़रवरी का महीना। गुलाबी सर्दी वाली सुबह। नोएडा के पैराडाइज सोसायटी में विकास का 'प्रेम निवास'। शादी को दस बरस बीत चुके हैं।

बालकनी में सुबह की खिली-खिली धूप। 'धूप कितनी अच्छी लग रही है न' -चाय की चुस्की लेते हुए रूपा ने कहा। 'क्या बात है? कुछ डिमांड तो नहीं? आज मुझ पर बड़ा प्यार आ रहा है। ऐसे तो इतने बरसों में कभी ढंग से मेरी तारीफ भी नहीं की' -विकास ने कहा।

'ओह हो! इतनी शिकायतें। तुम नहीं समझोगे। स्त्रियां खुलेआम पति का तारीफ़ नहीं कर सकती। लोग नज़र लगा देंगे। मैं दिखावा नहीं करती। इस मॉर्निंग टी को ही ले लो। यह महज चाय नहीं है, तुम्हारे साथ होने का, तुम्हारे प्यार का, केयरिंग होने का एहसास है। आज के भाग-दौड़ वाले समय तुम्हारे साथ मॉर्निंग टी एक अलग सुकून एवं आनंद देता है। यही छोटे-छोटे पल जिंदगी में रिश्तों को जीवंत बनाती है, उसके गरमाहट को बनाए रखती हैं' -चाय की चुस्की लेते हुए रूपा ने जवाब दिया।

सूरज की रोशनी में रूपा की अलग छवि को विकास निहारे जा रहा था। मार्निंग टी की चुस्की और मिठास के साथ न जाने कितनी गलतफहमियां और कड़वाहटें घुलती जा रही थीं।

मृत्युंजय कुमार मनोज
टेकजोन 4, निराला एस्टेट
ग्रेटर नोएडा (पश्चिम) 201306

झूठा सच...

"ट्रि ट्रि.ट्रि".

"लल्ला ,सब ठीक तो है. तुम तो हमें भूले गये हो. बहुरिया को गये तो दुइ बरस से ऊपर होय गये.अकेले हमारौ मन नाहीं लगत है.हमहूं का वहीं पर बुलाय लेव. अब हमसे हिंया नांही रहा जात है."

"तुम कल शहर आय जाओ."

"तुम्हार लिये खुशखबरी है."

"तुम दादी बन गई हो."

सुहागी खुशी से झूम उठी थी .बरसों की मुराद पूरी हुई थी. वह खुशी के अतिरेक में पहले भगवान के सामने अपना माथा टिका कर उसे धन्यवाद दिया, हलवाई से बूंदी खरीद कर भोग लगाया और फिर गांव में सबको बूंदी से मुंह मीठा करवा कर अपने शहर जाने की खबर बताई. प्रसन्नता के कारण उनकी आंखों की नींद उड़ गई थी.उन्होंने रात में ही लाडली दुल्हनिया के लिये गुड़ और सोंठ डाल कर लड्डू बनाये.झोले में अपने कपड़े रख कर सोने की कोशिश करने लगीं परंतु उत्तेजना वश नींद उनकी आंखों से रूठ कर कोसों दूर चली गई थी . वह अपने अतीत में विचरण करने लगीं थीं.

गनपत, उनके इकलौते लाडले के ब्याह की कैसी धूम मची थी.मिट्टी से लिपा पुता कच्चा खपरैल के घर को हाथ के थापे से सजा दिया था. चौखट के चारों ओर गेरू से बेल बूटा उकेर दिया था. बच्चों ने रंग बिरंगे लाल हरे पीले पतंगी कागज की झंडियों से पूरा ओसारा सजा दिया था. आम के पत्ते का बंदनवार दरवाजे की शोभा बढा रहा था. चबूतरे के कोने पर बैठी महिलायें ढोलक पर बधाई गा रही थीं. वह परछन की तैयारी में लगी हुई बाहर भीतर कर रही थी. परछन की थाली में सब सामान रख कर यमुना भौजी से बोली थी,"भौजी, ये रही थाली, जब बहू आये तो तुम दिया जला लेना फिर परछन करके राई नोन जरूर उतार देना."

"काहे काकी तुम काहे नाहीं परछन करतीं अपनी बहुरिया का"?

"हाय दइया तुम सबन की मत मारी गई है .हम विधवा हैं की नाहीं.पहले पहल हम थोड़े ही दुलहिन का सामना करिहैं."

गनपत के बाबू बचपन में ही गुजर गये थे.उसने अकेले घर घर मजदूरी करके उसे पाला था. वह तो भला हो सेठानी का, जिन्होंने हर समय उसकी मदद की.उनकी उस पर बहुत कृपा थी. वह चुटुर पुटुर काम करने उनके घर रोज जाती थी.वह भर पेट उसे खाना खिला के भेजतीं और गनपत के लिये दे देतीं. कभी खेत की साग सब्जी तो कभी आटा दाल उसकी झोली में डाल देंती. खाली हाथ वह कभी न लौटती थी.गनपत तो ऊन्हीं के लड़के की उतरन पहन कर बड़ा हुआ है. वह गरीब जरूर थी लेकिन मेहनत मजूरी करके गनपत को पढाया लिखाया. उसने भी निराश नहीं किया .वह पढने में बहुत होशियार था. हमेशा अपनी कक्षा मे अव्वल आता रहा. हेडमास्टर साहब की मदद से उसका शहर के अच्छे कालेज में नाम लिख गया. उसके बाद उसने बी.टी.सी. कर ली थी. फिर उसकी सरकारी नौकरी भी लग गई थी. अब वह कमाऊ पूत बन गया था.

सुहागी लगभग 45 वर्ष की महिला थी.उसके सांवले

रंग में एक कशिश थी.उसकी आवाज में मिठास थी.वह गाने बजाने में निपुण थी. बड़ी,पापड़ बनाना,अनाज साफ करना सारे काम वह चुटकियों में करती थी इसीलिये किसी के घर में कोई कामकाज हो तो उनके बिना पूरा नहीं होता था.ढोलक की थाप और गाने के लिये तो उनका बुलावा दूसरे गांव से भी आया करता था.उनकी जीवन की जरूरतें इन्हीं सब कामों से पूरी होतीं थीं.किसी के घर में कोई कामकाज हो तो सबसे पहले सुहागी काकी की गुहार होती थी. यह सब करके उन्हें खुशी मिलती थी.और मिलने वाला पैसा,साड़ी बर्तन आदि आज उनके खूब काम आ रहा है. जब वह ढोलक पर गीत गाना शुरू करतीं तो रात कब बीत जाती, यह पता ही नहीं चलता था. नाचने में भी वह बहुत उस्ताद थीं, जब वह घुमेरी लगा कर नाचतीं तो महिलायें कह उठतीं थीं ,बस भी करो काकी, चक्कर आ जायेगा.

लड़कों के ब्याह में रात को रतजगा में जब वह नकटा करते समय स्वांग बनातीं तो गांव की सारी औरतें हंसते हंसते लोटपोट हो जातीं. वह कभी भी किसी के काम को मना नहीं करतीं थीं.दिन हो या रात सबके काम के लिये तैयार रहतीं थीं .कुछ दिन पहले की ही तो बात है जब राम सुंदर सुनार की बहुरिया के बच्चा होने वाला था,वह दर्द से बिलख रही थी.मूसला धार बारिश हो रही थी, चंदा दाई को बुलाने के लिये कैसे कोई जाये.उसका घर दूर था. सभी के माथे पर चिंता की लकीरें थीं, तभी किसी ने उनका नाम सुझाया था.तुरंत राम सुंदर ने अपने बड़े बेटे को उनको बुलाने के लिये भेजा था.तुरंत वह पहुंच गईं थीं.बिना किसी घबराहट के वह मुस्तैदी से काम पर लग गईं.थोड़ी देर में ही बच्चे के रोने की आवाज हवा में गूंज उठी. सबके चेहरे पर खुशी की लहर छा गई.उन्होंने बताया कि जच्चा बच्चा दोनों स्वस्थ हें.सब लोग एक स्वर में काकी की वाह वाह कहने लगे थे.आज काकी न होतीं तो क्या होता ? रामसुंदर ने खुशी के मारे अपने जेब से नोटों की गड्डी निकाल कर उनके हाथ पर रख दी थी.

सबकी खुशियों में शामिल होने वाली सुहागी के घर में खुशी का पहला मौका था.इसलिये सारा गांव उनकी मदद के लिये खड़ा था.किसी ने गेंहू, तो किसी ने घी तो किसी ने शक्कर,किसी ने सब्जी,इस तरह से सब चीजें कैसे इकट्ठी हो गईं थी,खुद उन्हें नहीं मालूम .गांव की सब महिलायें मिलकर बहू भोज की तैयारी कर रहीं थीं. कोई सब्जी काट रहा था तो कोई आटा सान रहा था.कोई पूड़ियां तल रहा था .यह गांव की संस्कृति थी.कहीं कहीं आज भी है. ऐसा लग रहा था कि गांव के बेटे का ब्याह है.

कितनी पूजा पाठ और मान मनौतियों के बाद यह शुभ घड़ी आई थी.कल बेटे गनपत को दूल्हा बना देखकर उनकी पलकें भीग उठी थीं .फिर तो दुल्हन के आने का इंतजार हो रहा था.गाड़ी की आवाज सुनते ही एकदम से शोर मच गया,^ दुल्हन आ गई, दुल्हन आ गई "दुल्हन को देखने के लिये अफरातफरी मच गई थी .तब वह जोर से बोलीं थीं,^ पहले दुलहिन का परछन हुइ जाय देव. "यमुना भौजी ने परछन किया. घूंघट उठा कर बहू का मुखड़ा देख कर बोलीं, ^ सुहागी किस्मत वाली हो,बहू तो एकदम चांद का टुकड़ा है." वह दुल्हन को लेकर अंदर भगवान के पास लेकर गईं. गनपत और बहू से बोलीं,ठाकुर जी के आगे माथा टेको. भगवान् तुम लोगन का सदा खुश रखें.उसके बाद घूंघट उठा कर बहू का मुंह देख कर मुंह दिखाई में पायलें दी. उसकी सुन्दरता देख कर वह ठगी सी रह गईं थीं.

बहू का नाम सुन्दरी था. वह 19- 20 वर्ष की कमसिन किशोरी थी.घूंघट के अंदर लाज के मारे छुईमुई सी हुई जा रही थी.दुबली पतली, दूध सी सफेद गोरी,छोटे कद की सुन्दरी केवल नाम की नहीं वरन् रूप गर्विता सुन्दरी ही थी.लाल रंग की साधारण सी साड़ी , जेवर के नाम पर उसकी छोटी सी नाक पर नथ,जिसमें पड़े हुये लाल मोती, उसकी सुन्दरता में चार चांद लगा रहे थे. उसके गोरे नाजुक हाथों में लाल रंग की कांच की चूड़ियां सजी थीं. सुंदर छोटे छोटे पैर महावर, पायल और बिछुये से सजे थे.दुलहिन की सुंदरता को देखते ही सब गांव वाले गनपत और सुहागी की किस्मत से जल उठे थे.

सुंदरी गरीब मजदूर मां बाप की बेटी थी.ससुराल में आते ही उसने घर के कामकाज को संभाल लिया. वह उन्हें कोई काम न करने देती. रात में जब बहुरिया आकर उनके पैर दबाती तो उनका मन खुश हो जाता था.

खुशियों के पल तो जल्दी से पंख लगा कर उड़ जाते हैं. गनपत की छुट्टियां समाप्त हो गई,उसे नौकरी पर शहर जाना था.अपने प्रियतम को विदा करते समय सुन्दरी की आंखें भर आईं लेकिन उनका ध्यान रखते हुये उसने अपने आंसू पी लिये थे. वह उसी तरह उनका ख्याल रखती और घर के सारे काम करती.

गनपत हर छुट्टियों में घर आता.उन्हें और सुंदरी दोनों को ही गनपत का इंतजार रहता.वह जितने समय भी रहता घर मैं रौनक बनीं रहती. सुंदरी एकदम खिली खिली रहती लेकिन उसके जाते ही वह मायूस हो जाती. वह चुप चुप रहती.कुछ दिनों के बाद सुंदरी गनपत से शहर ले चलने को कहने लगी परंतु गनपत ने शहर में होने वाले खर्चे और परेशानियों के बारे में बता कर मना कर दिया. दोनों के बीच में रूठना मनाना भी होता रहता लेकिन सुंदरी गनपत की बांहों में विरह के पलों को भूल जाती.वह इन प्यार भरे क्षणों को पाकर निहाल हो जाती थी.

सुंदरी दसवीं पास थी.उसमें काम करने का सलीका था.वह सिलाई कढाई भी करना जानती थी, इसलिये गांव की लड़कियां उसे घेरे रहतीं. बच्चे भी भौजी भौजी करते रहते. वह छोटे बच्चों को पढा लिखा देती. लड़कियों को सिलाई कढाई सिखा देती. उसका समय भी बीत जाता और उसका मन भी लग जाता.इसी तरह उसके दिन बीत रहे थे.गनपत शहर में बच्चों को ट्यूशन भी पढाने लगा था .अब उसकी आमदनी बढ गई थी. गनपत की शादी को एक साल बीत गया था.

परंतु मानव मन की इच्छाएं असीमित होती हैं. जैसे ही मनुष्य की एक इच्छा पूरी होती है, दूसरी नई इच्छा का जन्म हो जाता है.मानव आखिरी सांस तक इच्छा पूर्ति के प्रयास में लीन रहता है.अभी तक उनके जीवन का लक्ष्य बेटे की परवरिश करना था, उसे योग्य बनाना था.जब वह नौकरी करने लगा तो शादी की इच्छा जाग उठी.जब वह पूरी हो गई तो अब पोते की चाहत जाग उठी.

घर के चबूतरे पर गांव की औरतों का जमघट तो रोज की ही बात थी न... औरतें चुप तो बैठ नहीं सकतीं ,बात करने के लिये कोई न कोई विषय तो चाहिये ही, शुरूआत में तो सब मिलकर सुन्दरी की तारीफ किया करतीं थीं .फिर साल बीतते ही चटखारों के लिये कुछ

नया विषय तो जरूरी था.

" काहे काकी , लड्डू कब खिलाय रही हो.इतना दिन से इंतजार करत करत हम सब चिहाय गई हैं."

यह यमुना भौजी का स्वर था. सुंदरी मां नहीं बन पाई इसलिये सबके बीच में खुसुर फुसुर होती रहती थी लेकिन उनके सामने किसी की हिम्मत नहीं होतीं लेकिन अब उनसे खुलकर बोलने लगीं थीं.

वह हंस कर टाल देतीं थीं,

"अभी का जल्दी है,अबै तो खान खेलन की उमर है."

लेकिन सच्चाई तो यह थी कि वह भी हर महीने इंतजार करतीं थीं कि इस महीने तो जरूर खुशखबरी मिलेगी.परंतु जल्दी ही उनका धीरज भी समाप्त होने लगा था . अब वह मुखर होकर महिलाओं के साथ बैठकर अपने भाग्य को कोसने लगतीं.जिस बहू सुंदरी को पाकर इनका जीवन धन्य हो गया था अब उसी सुंदरी के कारण उनके भाग्य फूट गये थे .

मानव मन की विडम्बना तो देखिये –क्षण क्षण में इसकी परिभाषा ही बदल जाती है. पहले तो सुंदरी कुछ समझ नहीं पाई थीं कि चर्चा का विषय वह स्वयं है लेकिन फुसफुसाहट भी जब कई लोगों के द्वारा होने लगती है तो वह शोर में बदल जाती है. अब तो उसे सुना सुना कर कहा जाता था.एक दिन तो उन्होंने हद कर दी थी.

"मुझे क्या मालूम कि ये बाँझ है ,नहीं तो गनपत से इसका ब्याह कभी न कराती.इसकी सुंदरता का क्या करूं, शहद लगा कर चाटूं क्या"?

एक दिन तो हद हो गई थी, जब पंडिताइन काकी अपने पोते को लेकर आईं थीं. लगभग दस महीने का गोरा चिट्टा, गोल मटोल,गदबदा सा बच्चा बैठ कर जोर जोर से रो रहा था.उसकी नाक भी बह रही थी.औरतें अपनी बातों में मशगूल थीं. सुन्दरी का मन नहीं माना, उसने उसे गोद में उठा लिया और उसे चुप करवाने लगी थीं तो पंडितानी की कड़कदार आवाज सुनाई पड़ी.

"बाँझ, तू मत छू, अपनी बुरी नजर से बच्चे को तो बचा. " पंडिताइन सुंदरी से हाथ जोड़ कर कह रही थी.

सुहागी चुपचाप सुनती रहीं थीं. सुंदरी फूट फूट कर रोती हुई अंदर चली गई थी. वह सिसक सिसक कर रो रही थी. गनपत ने घर के अंदर से सारी बातें सुन ली थी. पहले भी उसे कई बार लगा था कि सुन्दरी किसी कारण से परेशान रहती है.उसकी मुस्कान फीकी पड़ चुकी थी, उसके चेहरे की चमक समाप्त हो गई थी .वह देखता था कि वह उदास और बुझी बुझी रहती थी.गनपत ने उससे कई बार पूछा भी था, परंतु उसने हमेशा हंस कर टाल दिया था.उसने कभी भी उनकी शिकायत नहीं किया था लेकिन आज की बात सुनने के बाद सब कुछ आईने की तरह साफ हो गया था.

धीरे –धीरे उनकी हिम्मत बढने लगी थी . अब वह अकसर गनपत को सुना कर कहतीं" ,हम तो शायद बिना पोता खिलाये ही मर जायेंगें. "गनपत उनकी बातों को सुन कर अनसुनी कर देता था. अब उसे समझ में आ गया था कि अब पानी सिर से ऊपर होने लगा है. लेकिन वह जानता था कि यदि वह सुंदरी का पक्ष लेकर कुछ कहेगा तो अम्मा हंगामा मचा कर रख देंगी.

निःसहाय सुंदरी सब सहती हुई झूठी हंसी हंसती रहती. अम्मा ने अपनी जंग तेज कर दी थी . वह गनपत से उसकी उल्टी सीधी शिकायतें करतीं रहतीं थीं. फिर तो एक दिन अम्मां ने खुलकर एलान कर दिया कि अब हम गनपत का दूसरा ब्याह करेंगें तभी

वह दादी बन पायेंगी.

. गनपत मां के इस बदले हुये रूप को देखकर परेशान हो गया.जब से उसने होश संभाला है मां की हर इच्छा पूरी करने की कोशिश करता कहा है.वह चाहता था कि मां भी खुश रहें और सुंदरी भी खुश रहे.मां के चिड़चिड़ाहट ,उनकी चीख चिल्लाहट देख वह चिंतित हो उठा था. वह मन ही मन में सोचने लगा कि इस समस्या का समाधान कैसे हो सकता है.

अंत में उसने निर्णय कर लिया कि वह सुंदरी को अपने साथ शहर ले जायेगा . उसने अम्मा से कहा कि उसे शहर में बाजार का खाना खाना पड़ता है, इसलिये उसकी तबियत खराब रहने लगी है.

वह अब सुंदरी को वह अपने साथ शहर ले जायेगा अब तो अम्मा के हाथ के तोते उड. गये थे .वह घबरा कर अपने अकेलेपन का वास्ता देने लगीं. अपने बुढापे की दुहाई देकर रोना शुरू कर दिया था . लेकिन गनपत अपनी बात पर अटल रहा. अम्मा के रोने धोने का नाटक भी काम नहीं आया.

वह सुन्दरी को लेकर शहर आ गया.कुछ ही दिनों में सुन्दरी ने घर का रूप ही बदल दिया ,सब चीजें व्यवस्थित कर दी.घर घर सा लगने लगा था सुंदरी का भी रूप निखर उठा था .

गनपत सुन्दरी को लेकर अस्पताल गया ,उसने अपने और सुन्दरी के सब टेस्ट करवाये. बच्चा न होने का कारण डॉक्टर से पूछा तो डॉक्टर ने कुछ और टेस्ट बताने के बाद कुछ महीनों तक दवा खाने को दिया न.अंततः रिपोर्ट आने के बाद मालूम हुआ कि गनपत में कुछ कमी है , इसलिये वह मां नही बन सकती थी. वह दुःखी होकर रोने लगी और उससे दूसरी शादी कर लेने के लिये उस पर जोर डालने लगी. गनपत पढा लिखा समझदार नवयुवक था.वह हर परिस्थिति से समायोजन की क्षमता रखता था.

समय की गति बहुत तीव्र होती है . वह अकेले गांव जाता और अम्मां को रुपये देकर आ जाता. गांव वाले सुन्दरी को जादूगरनी कहते. गनपत को भी नालायक कह कर बुरा भला कहती रहती. जादूगरनी उद्बोधन के साथ सुंदरी को हर समय अनेक तरह की गालियां देती रहतीं. वह सोचतीं कि सुंदरी ने उनके बेटे को अपने वश में कर लिया है और मां से बेटे को दूर कर दिया है. जो बेटा सपूत था वह कपूत बन गया था .जो बहु सुलक्षिणी थी वह कुलक्षिणी बन गई थी.परिस्थितियां वही थीं मात्र नजरिये का अंतर हो गया था. बात का बतंगड़ बनाना तो लोगों का काम होता ही है. दूसरों की नुक्ताचीनी करने का आनंदमय टाइम पास महिलाओं का प्रिय शगल होता है. गनपत और सुंदरी रोज चर्चा का केन्द्र रहते. सुहागी की निरीहता चर्चा रूपी हवन में घी का काम करती.

गनपत सुंदरी को लेकर गांव एक बार भी नहीं गया था . उन्होंने कई बार सुंदरी को लेकर आने को कहा, उसका हाल चाल पूछती तो कह देता कि वह शहर में पढाई कर रही है.वह चाहकर भी बेटे से बच्चे के विषय में नहीं पूछ पातीं क्यों कि इसी चाहत के कारण तो बेटा और बहू दोनों ही उनसे दूर हो गये थे. गनपत भी अब उनसे ज्यादा बात नहीं करता था.सुंदरी को शहर गये हुये दो साल हो गये थे.वह मन ही मन गुस्से के कारण उबलती रहती.कई बार गनपत से दूसरी शादी करने के लिये भी कहतीं . परंतु बेटे का मौन देख उनकी जुबान पर भी ताला लग गया था. मां बेटे के रिश्ते के बीच दूरी आ गई थी.

उधर गनपत अपने प्रयास में लगा हुआ अस्पतालों के चक्कर लगा रहा था. उसने बच्चे को गोद लेने की अर्जी अस्पताल में दे रखी थी. काफी दिनों के बाद उसके प्रयास फलीभूत हो गये ,जब अस्पताल से उसके पास एक दिन फोन आया कि आप यहाँ आ जाइये.आपकी आवश्यकता के अनुसार यहां पर एक बच्चा है.

गनपत घर आकर बोला,^ सुन्दरी, मेरे साथ चलो ,आज हम लोगों को जीवन की सबसे बड़ी खुशी मिलने वाली है."

सुंदरी कुछ समझ नहीं पाई थी.क्योकि वह सच में सिलाई स्कूल का कोर्स कर रही थी इस कारण उसे कुछ सोचने की फुर्सत ही नहीं थी.कुछ दिनों से वह अपने इम्तहान में व्यस्त थी.

गनपत को अस्पताल के अंदर घुसते देख वह घबरा कर बोली ,^सब ठीक तो है."

"हां हां तुम अंदर तो चलो."

वहां एक नवजात कन्या उन लोगों का इंतजार कर रही थी. बच्ची को जन्म देने के बाद मां उसे छोड़ कर चली गई थी. अस्पताल वालों ने पुलिस में रिपोर्ट लिखाई ,लेकिन जब उसको लेने कोई नहीं आया तो पालनाघर उन्हें गोद देने का निर्णय लेकर उन्हें सूचित किया था.

सुंदरी के लिये यह अनमोल पल था.बहुत सारी लिखा पढी के बाद उसकी गोद में बच्ची को दे दिया गया था. बच्ची को गोद में पाकर सुंदरी को ऐसा लग रहा था कि वह दुनिया की सबसे भाग्यशाली औरत है. आज गनपत के चेहरे की खुशी देखते बन रही थी. अम्मा के बिना सब कुछ उन दोनों को फीका फीका लग रहा था.

तभी गनपत ने अम्मा को खबर कर दी,^ अम्मा तुरन्त आ जाओ ,तुम्हारे पोती हुई है. तुम दादी बन गई हो^

सुहागी तो खुशी के मारे फूल कर कुप्पा हो गई थी.उनके लिये तो एक एक पल बिताना भारी हो गया था. पोती को गोद में लेकर वह बार बार बहू और बेटी की नजर उतार कर बलैया ले रही थी. वह अपने किये हुये अत्याचार के लिये पछता रही थी. उन्होंने बेटे बहू से अपने व्यवहार के लिये माफी भी मांग ली थी.

थोड़े दिनों के बाद गनपत ने कोशिश करके अपना तबादला गांव के स्कूल में ही करवा लिया. उसके एक झूठे सच ने उसे दुनिया का सबसे लायक बेटा बना दिया. कुलक्षणी सुंदरी फिर से सुलक्षणी बन गई.इस झूठे सच को उन दोनों के सिवा कोई न जान सका.

पद्मा अग्रवाल

कागज़ का चोंगा

मैं एक साहित्यिक सम्मेलन से लौट रहा था, मेरे साथ मेरे और भी कई अन्य साहित्यकार मित्र थे. सभी को अलग-अलग दिशाओं में प्रस्थान करना था इसलिए सभी धीरे-धीरे अपनी-अपनी निर्धारित ट्रेन से रवाना हो गए और मैं रेलवे स्टेशन पर अपने गंतव्य की ओर जाने वाली ट्रेन की प्रतीक्षा करने लगा.

मेरा मन यह सोच कर बेहद प्रफुल्लित था कि मैं कितना सौभाग्यशाली हूं कि मुझे एक राष्ट्रीय स्तर के साहित्यिक सम्मेलन में शिरकत करने का मौका मिला. यह सम्मेलन एक साहित्यिक सेवा समिति के द्वारा हिन्दी साहित्य के प्रचार प्रसार हेतु एक बहुत ही बड़े सभागृह में आयोजित किया गया था. इस सम्मेलन में कई शहरों व कस्बों के नामचीन व सुधी साहित्यकार व रचनाकार शरीक हुए थे.

सम्मेलन में कई अन्य साहित्यकारों से मिल कर,उनके विचारों एवं अभिव्यक्तियों से अवगत होने का अवसर मिला, जो अत्यंत ही ज्ञानवर्धक रहा. संस्था के द्वारा समारोह में शामिल हुए हम सभी रचनाकारों का पुष्प गुच्छ, श्रीफल, शॉल व स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया. किसी भी कलाकार या रचनाकार के लिए इस प्रकार, सम्मान प्राप्त करना गौरव की बात होती है. मैं स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रहा था.

सभा में एक नवोदित रचनाकार के पुस्तक का विमोचन भी किया गया तथा कुछ पुस्तकों पर साहित्यिक समीक्षा भी हुई. पुस्तक समीक्षा के दौरान कई वरिष्ठ साहित्यकारों ने साहित्य का उद्देश्य एवं साहित्यकारों की समाज में भूमिका के विषय में बहुत ही सटीक व्याख्यान दिया. जिसे सुनकर मुझे स्वयं के साहित्यकार होने पर संतुष्टि का एहसास भी हुआ.

मैं रेलवे स्टेशन के प्रतीक्षालय में बैठा एक अच्छे साहित्य एवं साहित्यकार के महत्व व योगदान के साथ अपनी रचनाओं का समाज में प्रभाव को लेकर विचारमग्न था तभी उद्घोषिका के द्वारा मेरे निर्धारित ट्रेन का प्लेटफॉर्म पर आगमन की घोषणा हुई और मैं सजग हो गया. अपना कपड़े का थैला कांधे में लटका ट्रेन की ओर बढ़ा. प्लेटफॉर्म पर ट्रेन के रूकते ही असंख्य यात्रियों का सैलाब उमड़ आया. जिनमें से कुछ ट्रेन पर चढ़ने तो कुछ उतरने वाले थे. सामान्य गति में दिखाई देने वाला प्लेटफॉर्म अचानक से शोरगुल और अत्यधिक चहलपहल में तब्दील हो गया. चिल्लपों की आवाज़ के संग चाय....चाय गरम...चाय गरम, समोसे गरम, कोल्ड ड्रिंक ठंडा जैसे शब्द भी गुंजने लगे.

मैं अपने आबंटित बोगी के आरक्षित सीट पर आ बैठा. यहां बोगी में पहले से ही कुछ लोग मौजूद थे. इस स्टेशन से मेरे शहर के स्टेशन

की दूरी लगभग ढाई तीन घण्टे की थी. मेरी यात्रा की अवधि तय थी और इस अवधि के सदुपयोग का साधन एक लेखक के झोले में तो होता ही है. मैं अपने झोले से एक कहानी संग्रह की पुस्तक निकाल पढ़ने लगा, जो कि एक बाल साहित्य संकलन था और आज ही मुझे यह पुस्तक सम्मेलन में उपहार स्वरूप प्राप्त हुआ था.

उसी वक्त बोगी में एक मूंगफली बेचने वाला भी चढ़ा, जो कागज़ के छोटे-छोटे चोंगे बना कर भूनें हुए मूंगफली बेच रहा था. बोगी में उपस्थित कुछ लोगों ने फल्ली दाना खरीदा, कुछ ने नहीं. उस फल्ली बेचने वाले ने मुझे भी एक चोंगा मूंगफली खरीदने का आग्रह किया और मैंने खरीद लिया. मूंगफली खाते हुए अभी मैं एक कहानी पढ़ा ही था कि मेरे सामने वाले सीट पर अपने अभिभावकों के साथ बैठा बालक मुझसे बोला-

"अंकल आप कहानी पढ़ रहे हैं..?"

मैंने मुस्कुरा कर जवाब दिया-"हां"

मेरे हां कहते ही उस बालक के चेहरे पर चमक आ गई और वह चहकता हुआ बोला -

"अंकल मुझे भी कहानी पढ़ना अच्छा लगता है."

मैंने थोड़ा आश्चर्य मिश्रित मुस्कान के साथ उस बालक की ओर देखा क्योंकि आज के डिजिटल युग में जहां हर कोई मोबाइल में ही व्यस्त रहता है किसी के पास इतनी फुर्सत कहां कि किताब भी छुएं. निश्चित तौर से यह बालक कहानियां मोबाइल पर पढ़ता होगा यही सोच कर मैंने उस बालक से कहा -

"मोबाइल पर पढ़ते हो कहानियां ."

उसने फौरन जवाब दिया-

"नहीं अंकल मैं बुक से पढ़ता हूं."

मैं दोगुने आश्चर्य से उस बालक और उसके माता-पिता की ओर देखने लगा लेकिन उसके माता-पिता तो दोनों ही मोबाइल में व्यस्त थे फिर मैंने बड़े प्यार से उस बालक से पूछा -

"तुम्हारा नाम क्या है?"

उसने कहा -"रोहण"

"कौन सी क्लास में पढ़ते हो?"

"क्लास सिक्स्थ."

मैंने उस बालक को परखने की चाह से फिर पूछा-"कौन-कौन सी बुक पढ़ते हो?"

वह बड़े ही मासूमियत से कुछ बाल पुस्तकों के नाम गिनाने लगा.

मैं बहुत प्रभावित हुआ. मैं उस बालक से कुछ और पूछता इससे पहले ही उसके अभिभावक एक अनजान शख्स को अपने बेटे के संग घुलता मिलता देख मोबाइल से ध्यान हटा मेरी तरफ मुखातिब हुए. मैं एक लेखक हूं यह जान कर उनकी आंखों में मेरे लिए सम्मान के भाव उभर आए, परंतु कुछ ही देर उपरांत वे दोबारा अपने मोबाइल में मशगूल हो गए, किन्तु वह बालक अब भी मेरी तरफ रूचिकर भाव से देख रहा था.

मूंगफली के कुछ दाने मुंह में डाल मैंने उस बालक को भी फल्ली दाने लेने का इशारा किया लेकिन उसने लेने से इंकार कर दिया. तब मैंने उससे कहा- "तो तुम्हें क्या चाहिए ...?"

मेरे हाथों में रखे किताब की तरफ देख, वह थोड़ा मुस्कुराते हुए बोला-

"ये बुक चाहिए." किताब के प्रति उसकी रूचि देख मुझे बहुत खुशी हुई, मैंने उसे वह किताब पढ़ने के लिए दे दिया और वह बड़ी तल्लीनता से बाल कहानियां पढ़ने लगा. मैं चोंगा से फल्ली दाने चुगने

लगा.

कुछ समय पश्चात मूंगफली के दाने समाप्त हो गए किन्तु कुछ दाने चोंगा में रह गए, जिन्हें निकालने के ध्येय से मैंने चोंगा खोल दिया, उसे खोलते ही मेरी आंखें फटी की फटी रह गई. राष्ट्रीय स्तर के जानेमाने अखबार पर प्रकाशित मेरी एक रचना का स्वरूप चोंगा....! और वह भी मेरे ही हाथों में. यह देख मन खिन्न हो गया,आज सुबह से लेकर अब तक के सारे सम्मान निरर्थक लगने लगे. मुझे लगने लगा मेरे रचनाकार होने का कोई महत्व ही नहीं, कोई अर्थ ही नहीं सब अर्थहीन है जब रचनाओं का यह हस्र है.

तभी झटके से ट्रेन रूकी, मेरी इस यात्रा का यह आखिरी स्टेशन था. मुझे यहां उतरना था. मन दुखी था और मैं मन ही मन यह सोच रहा था कि अब मैं कभी भी कुछ नहीं लिखूंगा क्योंकि यह केवल एक लेखक का ही दायत्व नहीं है कि वह समाज को जागरूक करें, लोगों के अधिकारों के लिए आवाज उठाए या फिर समाज सुधार के लिए निरंतर अपना कलम घिसता रहे और भी कई वर्ग हैं यह सब करने के लिए.

अपने ही विचारों में गुम जब मैं बोगी से जाने लगा तभी उस बालक ने मेरी ओर किताब बढ़ाते हुए कहा-

"अंकल आपकी बुक"

मैंने लपक कर वह किताब उसके हाथों से यह सोच कर ले लिया कहीं कल को इस पुस्तक के पन्ने भी मुझे किसी और रूप या दशा में ना मिले. फिर उस बालक ने भोलेपन से कहा-

" अंकल इस बुक में बहुत अच्छी कहानियां है. मुझे बहुत अच्छी लगी. मैं भी बड़ा हो कर लेखक ही बनूंगा."

उस बालक से यह सुन मैं वह किताब उस बालक के हाथों में देते हुए बोला-

"इसे तुम रख लो बाकी की बची हुई कहानियां भी पूरी पढ़ लेना."

"थैंक्यू अंकल" कहते हुए उसने खुशी से वह किताब रख लिया.

मैं ट्रेन से उतर गया और थोड़ी ही देर पहले अपने मन में आए विचार कि अब कभी फिर कुछ नहीं लिखूंगा पर पुनः विचार करते हुए यह सोचने लगा कि दुनियां और प्रकृति तो परिवर्तनशील है, सभी का स्वरूप बदलता ही रहता है. पतझड़ में वृक्ष के पत्ते पीले पड़ जाते हैं, सूख जाते हैं टहनियों से गिर जाते हैं लेकिन फिर दोबारा नए कपोल फूटने लगते हैं. प्रकृति के संसाधनों का हम मनुष्य कितना दुरूपयोग करते हैं उसके बावजूद प्रकृति कभी भी हमें देना बंद नहीं करती. हम मनुष्य को भी प्रकृति की भांति उदार होना चाहिए. समाज को अपना सर्वोत्तम देना चाहिए. आज वह बालक लेखक इसलिए बनना चाहता है क्योंकि उसने अच्छी पुस्तकें पढ़ीं हैं. तभी मुझे ध्यान आया कि चोंगा के काग़ज़ का टुकडा तो अभी भी मेरे हाथ में है, मैंने उस कागज के टुकड़े को हवा में उड़ा दिया और घर आकर एक नई रचना कलमबद्ध करने लगा.

प्रेमलता यदु,
बिलासपुर छत्तीसगढ़ 7587271678

लेखकों का हार्दिक स्वागत है !

Book is Available on Flipkart

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

Book Name : गंदी औरतें (सामाजिक उपन्यास)

Author : सुधेन्दु ओझा

ISBN : : 978-81-958985-9-6

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 188

Price : 250/-

Genre Prose : गद्य (उपन्यास)

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

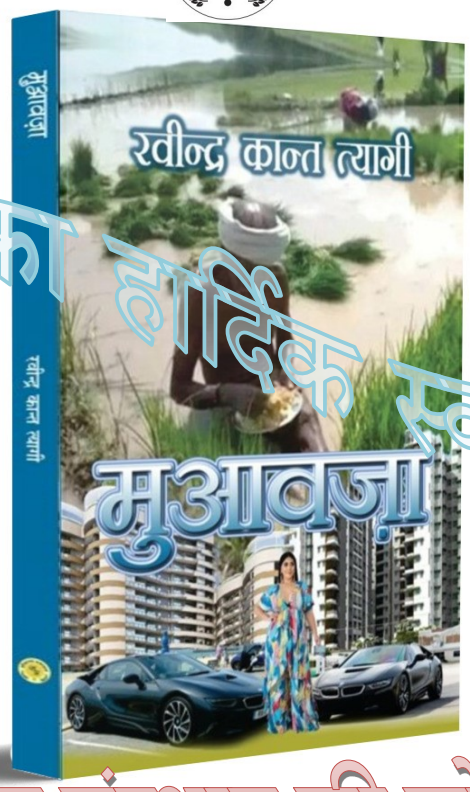

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

Book Name : मुआवज़ा
Author : रवीन्द्र कान्त त्यागी
ISBN : 978-81-958985-2-7
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 160
Price : 250
Genre : Prose /गद्य

मुआवज़ा का कथालोक देश की राजधानी दिल्ली के समीप बसे ग्रामीण इलाके से संबंधित है किन्तु इस कथालोक का विस्तार कर के देश के इसे किसी भी उस ग्रामीण क्षेत्र के ऊपर लागू किया जा सकता है जो विस्तृत होते हुए शहर के समीप हो या फिर जहां विकास की आंधी पहुँच रही हो।

जरूरी नहीं कि ग्रामीण अंचल शहर में विलीन हो कर शहर की संस्कृति या विकृति के अनुरूप हो जाएँ।

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : जीवन उल्लास
Author डॉ सत्या सिंह
ISBN : 978-81-958985-3-4
Language : हिन्दी
Year of Publication :2023
Page Numbers : 108
Price : 250/-
Genre Poetry : कविता
जीवन के विभिन्न भाव-दशाओं और सत्य को निरूपित करती सरल एवं सरस कविता।

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

"मैं भी जिम्मेदार हूं।"

अर्चना त्यागी

सान्या अब अपने मन को पूरी तरह समझा चुकी थी कि उसके सपने वास्तविकता की जमीन पर पांव नहीं रख पाएंगे। पांच साल कैंसर से जंग लड़ने के बाद मां ने दुनिया को अलविदा कह दिया था। मां जब तक जीवित थी, बीमारी के बावजूद घर के काम का दबाव उन्होंने सान्या के ऊपर नहीं आने दिया। खुद काम नहीं कर पाती तो काम वाली को बुला लेती। मां के जाते ही घर एकदम शांत हो गया था। ऐसा लगता था जैसे घर में सब मां से ही बात करते थे। उनके जाते ही सब चुप थे। दोनों छोटे भाई उसके साथ ही रहते। घर के कामों में सान्या की हर संभव मदद करते। उसके साथ, उसके कमरे में ही सोते।

मां जब अस्पताल में होती थी तब भी सान्या ही घर संभालती थी लेकिन एक उम्मीद होती थी उनके वापस लौट आने की। घर में आते ही मां का चिर परिचित वाक्य,अब मैं घर आ गई हूं, शीनू तुम अपनी पढ़ाई पर ध्यान दो। घर का काम धीरे धीरे कर लूंगी। सौरव और अंकुश भी थोड़ी सहायता कर देंगे। सब हो जाएगा, तुम अपने काम पर ध्यान दो। लेकिन अब ऐसा बोलने वाला कोई नहीं था। पापा ने वापिस ऑफिस जाना शुरू कर दिया था। वह दोनों भाइयों के साथ घर पर रह जाती। रिश्तेदारों ने कुछ दिनों तक हाल चाल पूछकर औपचारिकता पूरी कर ली थी। अब तो सबकी सलाह यही थी कि सान्या को घर संभाल लेना चाहिए जिससे दोनों छोटे भाइयों को कोई परेशानी नहीं हो। मां की कमी महसूस नहीं हो। सान्या सब सुनती और चुप रह जाती। उसे भी कोई दूसरा रास्ता नज़र नहीं आ रहा था। मानसिक रूप से उसने खुद को तैयार कर लिया था कि अब कॉलेज खुलने पर वापिस हॉस्टल नहीं जाएगी। दोनों छोटे भाई और पापा, मां की मौत से उबर जाएंगे तो आगे की पढ़ाई प्राईवेट पूरी कर लेगी। उसकी दिनचर्या अब घर की चारदीवारी में सिमट गई थी।

जैसे जैसे कोरो ना का प्रभाव ढीला पड़ रहा था, कॉलेज खुलने की सूचनाएं अखबारों में

आने लगी थी। एक दिन खाना खाते खाते पापा ने उससे पूछा भी था, "शीनू तुम्हारे कॉलेज की कोई सूचना आई, कब खुल रहा है"? सान्या ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह किचन में आकर खड़ी हो गई। नहीं चाहती थी कि उसके सपनों और ज़िम्मेदारी की जंग फिर से उस के मन मस्तिष्क पर हावी हो। पापा भी उसकी मन: स्थिति समझते थे इसलिए दोबारा नहीं पूछा।

एक दिन उसके कॉलेज से भी मेल आ गया, वापिस आकर कक्षाएं शुरू करने का। लेकिन सान्या ने घर में कुछ भी नहीं बताया। वह नहीं समझ पाई थी कि समय ने उसके दोनों छोटे भाइयों को भी परिपक्व बना दिया है। छोटा अंकुश जो छटी कक्षा में आया था पांचवीं पास करके, खुद से पढ़ाई करने लगा था। सान्या से छोटा सौरव सुबह जल्दी उठकर सबके लिए चाय बनाने लगा था। कपड़े धोने लगा था। धीरे धीरे सब बदल रहा था।

नए साल के पहले दिन सान्या सोकर उठी तो कुछ अलग लगा। अंकुश तैयार होकर घूम रहा था। पापा भी तैयार खड़े थे। सौरव उन दोनों को नाश्ता दे रहा था। सान्या हैरान थी। रात में सोने से पहले दोनों ने उसे कुछ भी नहीं बताया था कि कहीं जाने वाले हैं। उसे पापा ने भी कुछ नहीं कहा। वह कुछ कहे बिना उठकर बाथरूम में चली गई। जब बाहर आई तो सौरव सूटकेस उठाए खड़ा था। वह कुछ बोले इससे पहले ही पापा ने बता दिया," शीनू, अंकुश का एडमिशन तुम्हारे कॉलेज के पास ही एक रेजिडेंशियल स्कूल में करवा दिया है। तुम जब चाहो उससे मिलती रहेगी।" सान्या कुछ बोलती उससे पहले अंकुश तपाक से बोला," दीदी आप भी कॉलेज चली जाओगी, अगले हफ्ते। मैंने इसीलिए पापा को मना नहीं किया। मां ने मुझसे कहा था कि मुझे भी जिम्मेदार बनना है। दीदी को अपने कामों के लिए परेशान नहीं करना है।" सान्या की आंखे भर आई। तभी सौरव ने बात संभाल ली," दी, आप अकेले नहीं हो हम सब मिलकर मां की जिम्मेदारी उठाएंगे। आपको अपनी पढ़ाई नहीं छोड़ने देंगे।" सान्या ने दोनों छोटे भाइयों को गले से लगा लिया। आंखों के आंसू छुपाते हुए बस इतना ही बोल पाई," रुको मैं भी तैयार होकर आती हूं। अंकुश का स्कूल मुझे भी तो देखना है।" पापा मां की तस्वीर को निहार रहे थे जैसे कह रहे हों," तुम सब सिखा गई अपने बच्चों को। जिम्मेदारी बांटना भी और निभाना भी।"

लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली110092

कहो क्या हादसा हुआ

ये क्यों हुए-ये क्यों हुए
अजीब से ये सिलसिले
धरा-गगन से हो गये
दिलों के बीच फ़ासले।

ये लग रहा है आज तो
वो मीत ख़्वाब में मिले
मेरे तुम्हारे बीच तो हैं
फ़ासले ही फ़ासले
अगर है कोई बात तो
गिले तुम्हें, हमें गिले।

वो बात प्यार की हुई
किताब के से फ़लसफ़े
चलो फिर अजनबी बने-
चलो फिर अजनबी बने।।

कहो क्या हादसा हुआ
हमारा प्यार क्या हुआ
मुहब्बतों खुलूस का
वो पेड़ सूख क्यों गया?
फ़रेब गर है जिन्दगी
फ़रेब मुझ से क्यों हुआ?
मेरे तुम्हारे बीच में
ये कौन तीसरा हुआ?

ये कैसा हादसा हुआ?
मुहब्बतों का क्या हुआ?
वो रौशनी को क्या हुआ?
खुलूस खो कहाँ गया?

मिलें किसी भी मोड़ पर
नज़र न हो खफा-खफा
चलो फिर अजनबी बने-
चलो फिर अजनबी बने

आशा शैली

ग़ज़ल
एक साहित्य विधा

डॉ. ज़ियाउर रहमान जाफ़री

हिंदी ग़ज़लों में अंग्रेजी के तत्व

हिंदी भारत ही नहीं विश्व की एक महत्वपूर्ण संवाद की भाषा है.एक भाषा के साथ यह हमारी अस्मिता और सांस्कृतिक मूल्यों की निशानी भी है.इसके पास एक समृद्ध व्याकरण,भाषा और काव्यशास्त्र तथा अन्य भाषाओं के शब्दों को पचाने की अद्भुत क्षमता है.हिंदी में जो बोली जाती है,वही लिखी जाती है.इसमें साइलेंट शब्द नहीं होते. यह भाषा अपनी प्रमुख बोलियों अवधि,कन्नौजी ,बुंदेली,बघेली भोजपुरी,राजस्थानी,छत्तीसगढ़ी मालवी ,नागपुरी मगही,मैथिली और कई देशज तथा विदेशज शब्दों से मिलकर बनी है.इसलिए हिंदी ग़ज़ल का स्वभाव हिंदी भाषा के स्वभाव से मिलता जुलता है. हिंदी गजल महबूब की भाषा है,और एक महबूब की भाषा वही होती है जिसमें किसी भाषा की बंदिश नहीं होती.जो मिठास के साथ जवान से निकल जाए गुफ्तगू बन जाती है.

भाषा के स्तर पर भी गजल ने कई दौर देखे हैं.गजल जब अरबी में थी,फिर फारसी और उर्दू में आई तो उस समय तक यह बोलचाल की भाषा की गजल नहीं थी. उसके अपने कारण भी थे.यह बादशाह के हरम में पली -बढ़ी,इसलिए वहां भाषाई ललित्य से ज्यादा भाषाई ज्ञान और कौशल पर ध्यान दिया गया.

उर्दू में ग़ालिब ने सबसे पहले गजल को आम फ़हम शब्दों में लाने की कोशिश की.उनकी गजल पहली बार सल्तनत से निकलकर आम लोगों तक पहुंची ,और शायद यही कारण है कि उर्दू गजल में ग़ालिब का मुकाम आज भी काफी ज्यादा है. उन्होंने फारसी की चली आ रही गजल को हिंदुस्तानी जबान में लाने की कोशिश की,और उन्हें नज़्म -उद -दौला जैसा खिताब भी मिला. कहने को ग़ालिब से पहले मीर की शायरी में भी गजल को सहज बनाने का यत्न देखा जा सकता है ,लेकिन ग़ालिब की शायरी उनसे ज्यादा आम लोगों से जुड़ती है.उनका एक बड़ा मशहूर शेर भी है-

हैं और भी दुनिया में सुखनवर बहुत अच्छे
कहते हैं कि ग़ालिब का है अंदाज़े -बयां और

असल में किसी कविता की भाषा उसके कथन और अंतर्वस्तु से बनती है. अज्ञेय कविता के गुण और भाषा के गुण को एक करके देखते थे. कविता की कुछ विधायें व्यंजनात्मक होती हैं तो कुछ में सपाट व्यायनी पाई जाती है.कभी-कभी कवि का मूड भी भाषा को प्रभावित करता है. एक समय में होने के बावजूद मुक्तिबोध,रघुवीर सहाय ,धर्मवीर भारती और कुंवर नारायण की कविता के भवबोध में अंतर पाया जाता है.

हिंदी गजल जहां आरंभ से ही भाषा को सरल और सहज करने की कोशिश में लगी हुई है,वहीं आधुनिक हिंदी कवि मानते हैं कि एक ही शब्द,मुहावरे प्रतीक और बिंब कविता में बार-बार प्रयोग होने से अपना अर्थ गाम्भीर्य खो देते हैं. सच तो यह है की बौद्धिक विमर्श वाली कविता किसी खास व्यक्ति तक सीमित हो कर रह जाती

उर्दू ग़ज़ल और इज़ाफ़त

है.हिंदी कविता का इतिहास बताता है कि आम जनता के बीच जिस तरह दोहे और गजल अपनी सहजता और सम्प्रेषणीयता के कारण लोकप्रिय हुए,वह स्थान अलग-अलग भाषा विधान और अमूर्तता के कारण काव्य की अन्य भाषा नहीं ले सकी.

हिंदी ग़ज़ल में जितने हिंदी के शब्द हैं,उतने ही अन्य भाषाओं के भी,या फिर यूं कहें कि हिंदी ग़ज़ल में जितना भाषा का सवाल है उससे ज्यादा अभिव्यंजना का सवाल है ,पर ऐसा भी नहीं कि हिंदी के तमाम गज़लकार और समीक्षक इसके पैरोकार रहे हों. हिंदी ग़ज़ल का एक वर्ग ऐसा भी है जो हिंदी गजलों में शुद्ध हिंदी और संस्कृतनिष्ठ शब्दों में लिखने का हिमायती है. कुछ गजल प्रधान पत्रिका के संपादक भी ऐसे हैं जिन्होंने हिंदी- संस्कृत शब्दों से युक्त शुद्ध ग़ज़ल भेजने का बोर्ड टांग रखा है. असल में गजल लेखन एक स्वतः प्रक्रिया है. उसकी जबान खुद चलकर शायरी के पास आती है,जिसे किसी संश्लिष्ट भाषा में कैद नहीं किया जा सकता. एक कवि या शायर अपनी रचना में जिस विचार को रखता है,वह विचार भाषा के रूप में हमारे सामने आती है. हिंदी ग़ज़ल में कहन , सुख-दुख और तकलीफ में भी आम आदमी की है,तो भाषा में भी उन्हीं के अनुभव ,चिंतन- मनन और संवेदनाओं से जुड़ी हुई है. संसद से सड़क तक के धूमिल जब कहते हैं-

अधजले शब्दों के ढेर में तुम/
क्या तलाश रहे हो

तो वह एक प्रकार से आमजन की भाषा में लौटने का आग्रह करते हैं.

हिंदी ग़ज़ल में उर्दू -हिंदी और लोक भाषा के शब्द ही नहीं हैं ,बल्कि ऐसे अंग्रेजी शब्द भी हैं जो हमारी जवान में घुल- मिल गए हैं. ऐसे शेरों में जब अंग्रेजी के वर्ड आते हैं तो उससे शेर की खूबसूरती में और ज्यादा इजाफा हो जाता है. साथ ही अशआर में पुख्तगी भी आती है,और लालित्य भी पैदा होता है. कुछ शेर देखें -

साल चढ़े ही छुट्टी लेकर बैठ गया
सूरज की अब्सेंट लगाई जाएगी- -अशोक अग्रवाल नूर

मेरे आने की तारीखें बराबर देखती होगी
वो हर शब सोने से पहले कैलेंडर देखी होगी
-ए. एफ नज़र

एक कश लेकर महज़ सिगरेट तुमने फेंक दी
और मैं बेचैन होकर देर तक जलता रहा
-विनय मिश्र

बहुत मिस्टेक होती जा रही है
मोहब्बत फेक होती जा रही है

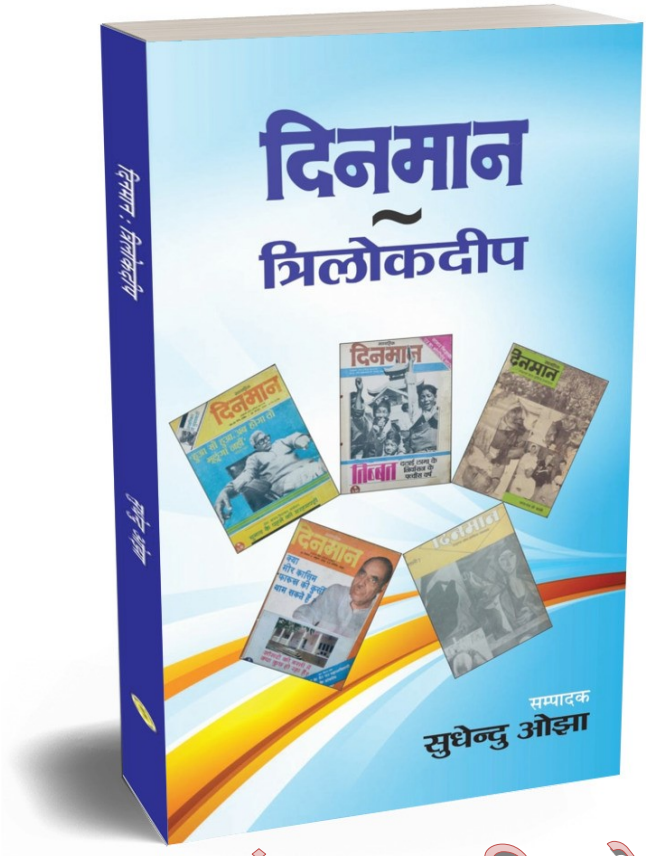

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

Book is Available on Flipkart

Book Name : दिनमान~त्रिलोकदीप
Author सुधेन्दु ओझा
ISBN : 978-81-963524-6-2
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 168
Price : 300/-
Genre: गद्य : पत्रकारिता

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

-एम. ए तुराज़

हमारे कान कोई डस्टबिन हैं
जो इनमें फेंक दो बेकार बातें
-के पी अनमोल

वक्त के इस शार्पनर में जिंदगी छिलती रही
मैं बनाता ही रहा इस पेंसिल को नोकदार
-हरेराम समीप

अगर आप गौर करें तो इस अशआर को देखकर पाएंगे कि यहां एब्सेंट,कैलेंडर ,सिगरेट,मिस्टेक,डस्टबिन जैसे शब्दों से शेर मज़ीद खूबसूरत और दिलकश बन गए हैं. उनकी जगह पर अगर दूसरे शब्द रखे जाते तो शायद यह इतने प्रभावपूर्ण नहीं बनते.

हिंदी भाषा की यही विशेषता है कि यह सगी मां किसी की भाषा से सौतेलापन नहीं रखती ,कुछ और ऐसे शेर देखे जा सकते हैं-

खुशी से कांप रही थी यह उंगलियां इतनी
डिलीट हो गया एक शख्स सेव करते हुए
-फहीम बदायूंनी

मुझे डायवोर्स देकर तू भला क्यों
मेरी सेहत बराबर पूछता है
-हरेराम समीप

चित्रपट पर सत्यता को ओढ़ कर आयें सभी
रेप के हर सीन का किरदार आला चाहिए
-नज़्म सुभाष

कब न जाने लौट कर आ जाए तू ये सोचकर
इस मकाने -दिल पर चस्पा आज तक टूलेट है
-वही

वायरस मोहब्बत का बढ़ रहा है तेजी से
इसके वास्ते भी एक वैक्सीन जरूरी है
-फौज़िया अख्तर

बस इस सबब से कि उसमें तुम्हारा अक्स रहा
मैं आईनों से कई डील करता रहता था
-शानुर रहमान साबरी

वह जो सारे शहर का गाइड है
उसको अपना पता नहीं मालूम
-बशीर बद्र

यह हिंदी ग़ज़ल में प्रयुक्त अंग्रेजी के ऐसे शब्द हैं ,जिसके माध्यम से सच्चाई की तीव्रता और गहराई को समझने में मदद मिली है.इसमें भाषा आरोपित नहीं बल्कि वास्तविक होकर हमारे सामने आई है. हिंदी ग़ज़ल में यह शब्द प्रयोग के तौर पर पहली बार प्रयुक्त हुए हैं , जिसे कविता के योग्य नहीं समझा गया था.नई कविता में जो कुछ अंग्रेजी के शब्द रिपीट होते हैं वह वास्तव में यौन क्रिया से संबंधित ऐसे शब्द हैं जिसे नग्नता छिपाने के लिए प्रयोग किया गया है,पर हिंदी ग़ज़ल में जहां प्रेम का वर्णन है,वहां भी खालिस पाकीज़गी और श्लीलता का होना लाज़िम है. यह ऐसी महबूबा है जिसे बेहियाई और उरयानियत नापसंद है.

गजल में मौजूद यह अंग्रेजी भाषा के शब्द समकालीन जीवन की अवस्था की वास्तविकता को मजबूती से रखते हैं.यह ऐसे शब्द हैं जो गजल को स्पष्ट करते हैं ना कि दुरूह बनाते हैं कुछ और शेर मुलाहिजा हों -

अम्न के मुद्दे पर हर भाषण में फोकस भी किया
किंतु पैने युद्ध के हथियार भी करते रहे
-ज़हीर कुरैशी

उसको तालीम मिली डैड- ममी के युग में
उसकी मां-बाप पुराने नहीं अच्छे लगते
-उर्मिलेश

हम तो सूरज है ठंड मुल्कों के
मूड आता है तब निकलते हैं
-विज्ञान व्रत

कहां तुम प्यार के पीछे पड़े हो
ये दुनिया फास्ट होती जा रही है
-ज़ियाउर रहमान जाफ़री

किताबें खोल कर बैठे हैं लेकिन
रिवीजन बस तुम्हारा हो रहा है
-प्रतीक शुक्ला

चाहो तो सारी रात रहो ऑनलाइन तुम
अब राब्ता नहीं है तेरे लास्ट सीन का

-राहुल कुमार

बाद मरने के मेरे तकिये के नीचे जो मिला
सब सुसाइड नोट समझे थे मेरी ताज़ा ग़ज़ल
-अशोक मिज़ाज

गजल अपने इसी भाषाई समन्वय और लालित्य के कारण लोकप्रिय होती गई.आज मुशायरों का मतलब ही गजल समझा जाने लगा है.एक समय था जब फिल्मों को सफल बनाने में ग़ज़ल की अपनी महत्वपूर्ण भूमिका थी. असल में गजल जज्बातों का बयान है , और अपने जज्बात को प्रस्तुत करने के लिए भाषा स्वाभाविक तौर पर सहजता से सामने आती है.

फिराक कहा करते थे कि कंठ से जो दर्द भरी आह निकलती है,वही गजल है. भाषा के संबंध में यह बात बार-बार दोहराई गई है कि जो भाषा दूसरी भाषा के शब्दों को पचा पाती है,वही भाषा जिंदा रहती है. अंग्रेजी में हर वर्ष सैकड़ो नये शब्द जुड़ जाते हैं और शब्द सम्पदा को समृद्ध करते हैं.गजल हमेशा खालिस गजल बनकर हमारे सामने आती है. गजल की अपनी रचना प्रक्रिया और नखरे हैं.हर साल को गजल के शिल्प और नखरे का ध्यान रखना होता है. यहां यह भी समझना जरूरी है कि गजल सिर्फ बहर नहीं है उसमें कथ्य का होना भी उतना ही जरूरी है.

चंद्रसेन विराट और चांद मुंगेरी जैसे शायर हिंदी ग़ज़ल में हिंदी के जातीय शब्दों के हिमायती रहे हैं ,पर दुष्यंत से लेकर आज के अधिकांश गज़लगो- अनिरुद्ध सिंहा,ज्ञान प्रकाश विवेक,डॉ.भावना,विज्ञान व्रत,कमलेश भट्ट कमल,नूर मोहम्मद नूर,वशिष्ठ अनूप आदि गजल में उस भाषा के हिमायती रहे हैं जो जन सामान्य में रच बस गई है. यही कारण है कि हिंदी ग़ज़ल में उर्दू अरबी और फारसी शब्दों के साथ अंग्रेजी के शब्द भी इसी सरलता और संपूर्णता से देखे जा सकते हैं. चंद और शेर देखें -

टेबल पर हमने खत लिखकर छोड़ दिया
भारी मन से फिर अपना घर छोड़ दिया
-अनिरुद्ध सिन्हा

बहुत कंफ्यूज करती है हमेशा
सड़क के बीच ये उलझन की आदत
-डॉ. भावना

क्यों नहीं निज प्रांत में ही जॉब हो
आप क्या-क्या कर रहे हैं क्या कहें
-हरि नारायण सिंह हरि

कितना मुश्किल है अपने खो देना
हम इमेजिन भी कर नहीं सकते

आदर्शो को रहने दो
सिस्टम भ्रष्टाचारी है
-एस सी शर्मा

आओ गूगल पे चैट करते हैं
कौन चिट्ठी का इंतजार करे
-राजेंद्र तिवारी

कोका-कोला क्रेज बढ़ाये
दूध दही से तोबा तोबा
-अविनाश भारती

सुबह की भीड़ में अक्सर यह ट्रैफिक जाम होती है
अगर हम देर से पहुंचे हमारी बेबसी होगी
-विकास

सांस लेने पर भी जीएसटी लगे
वो मसौदा भी बनाया जा रहा
-डी एम मिश्र

जाहिर है हिंदी ग़ज़ल में अंग्रेजी के यह शब्द न मात्र इसकी तासीर बढ़ा देते हैं ,बल्कि हमें अभिभूत भी करते हैं. एक ही शेर में गूगल और चिट्ठी शब्द तथा प्रांत और जॉब जैसे शब्द यह बताने के लिए काफी है कि हिंदी गजल को गजल से मतलब है वह भाषा की सीमा या वर्गीकरण के पीछे नहीं पड़ती.

हिंदी की कुछ ऐसी भी गजलें हैं,जिसमें प्रयोग के तौर पर गजल के हर शेर में अंग्रेजी शब्दों का बखूबी निर्वाह हुआ है. हिंदी के युवा गजलकार अभिषेक सिंह अपनी गजलों में बराबर प्रयोग कर रहे हैं. उनकी एक गजल के तीन शेर देखें -

तमाम उम्र भला कौन ऐसे धड़केगा
हमारे दिल में खुदा का मशीन लगता है

करूं तो सॉल्व में कैसे पुराने मेथड से
हमारा इश्क का परचा नवीन लगता है

समय के कैमरे में कैद हो रहे हैं हम

ये जिंदगी किसी मूवी का सीन लगता है
-अभिषेक सिंह

इसके बरअक्स ऐसी भी गजलें मिलती हैं ,जिसमें कुछ अप्रचलित अंग्रेजी के शब्द भी दिखते हैं,पर उसे भी पढ़ते हुए आनंद मैं कोई ख़लल पैदा नहीं होता -

अजब यही था कि दुनिया की रश में होता था
वह एक शख्स जो मेरे क्रश में होता था

तुम्हारी कुरबतें एम्यूज मुझको करती थीं
मैं उसके बाद मुसलसल ब्लश में होता था
-शानुर रहमान साबरी

पर जहां यह शब्द सहजता से आते हैं,वह शेर और अधिक प्रभावपूर्ण बन जाते हैं -

किचन की खिड़कियों का रुख बदल दो
मेरे बच्चे बहुत रोते हैं साहब
-तनवीर साकित

जो अक्सर खोये -खोये अपने ही पैकर में रहते हैं
नई तहज़ीब के बच्चे हैं कंप्यूटर में रहते हैं
-ए. एफ नज़र

खुशी के साथ ग्लोबल आपदाएं
भई खतरा तो हर व्यापार में है

आजकल जो उड़ रहे हैं रोज़ चार्टर प्लेन से
वे चुनावी रैलियों में फिर दलित हो जायेंगे
-राहुल शिवाय

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि हिंदी गजल जिस तरह से अपना सफर तय कर रही है,और आम लोगों की जबान पर मौजूद है इसका कारण यह है कि यहां इसकी बात उसी की जबान में है यह जवान किस भाषा की है प्रश्न यह नहीं है. प्रश्न यह है कि आम आदमी उस भाषा और अभिव्यक्ति से अपने आप को कितना जोड़ पाता है.
हिंदी शेर में जहां भी अंग्रेजी,अरबी,फारसी उर्दू के शब्द इस्तेमाल हुए हैं उसने गजल के सौंदर्य और संपदा में वृद्धि की है इसलिए ऐसे प्रयोग को स्वीकार करने में कोई हिचक नहीं होनी चाहिए.

संपर्क भाषा भारती के साहित्यकारों/रचनाकारों से विशेष अनुरोध :

1. रचनाएँ केवल UNICODE फॉन्ट में ही भेजें।
2. रचनाओं को साधारण टाइप करके ही भेजें। उनमें कलाकारी दिखलाते हुए फूल/पत्ते न डालें।
3. रचनाओं को 'Justified' फॉर्मेट में ही भेजें, 'Left Aligned' में नहीं।
4. नया पैरा शुरू करते समय भी या तो कोई स्पेस नहीं छोड़ें और यदि छोड़ते हैं तो वह स्पेस पूरे आलेख में समान हो।
5. सभी रचनाओं का प्रूफ पढ़ कर, उन्हें दुरुस्त कर के ही भेजें।
6. अर्ध विराम, पूर्ण विराम, विस्मय, प्रश्नवाचक के पहले स्पेस नहीं दें, बाद में दें।
7. संवाद कोष्ठक शुरू करने से पहले स्पेस दें और कोष्ठक आरंभ करने के बाद स्पेस नहीं दें।
8. सभी रचनाएँ : samparkbhashabharati@gmail.com पर ही भेजी जाएँ। व्हाट्सेप पर भेजी गई रचनाएं, प्राप्त संदेशों के क्रम में पीछे चली जाती हैं अत: उनका संज्ञान लेना कठिन होता है। फोन : 8595036445, 8595063206
9. रचना के साथ अपना फोटो अवश्य संलग्न करें।

सौभाव्य प्रकाशन

साहित्यकारों/रचनाकारों से विशेष अनुरोध :

1. रचनाएँ केवल UNICODE फॉन्ट में ही भेजें।
2. रचनाओं को साधारण टाइप करके ही भेजें। उनमें कलाकारी दिखलाते हुए फूल/पत्ते न डालें।
3. रचनाओं को 'Justified' फॉर्मेट में ही भेजें, 'Left Aligned' में नहीं।
4. नया पैरा शुरू करते समय भी या तो कोई स्पेस नहीं छोड़ें और यदि छोड़ते हैं तो वह स्पेस पूरे आलेख में समान हो।
5. सभी रचनाओं का प्रूफ पढ़ कर, उन्हें दुरुस्त कर के ही भेजें।
6. अर्ध विराम, पूर्ण विराम, विस्मय, प्रश्नवाचक के पहले स्पेस नहीं दें, बाद में दें।
7. संवाद कोष्ठक शुरू करने से पहले स्पेस दें और कोष्ठक आरंभ करने के बाद स्पेस नहीं दें।
8. सभी रचनाएँ : samparkbhashabharati@gmail.com ईमेल पर ही भेजी जाएँ।
9. पुस्तक की पाण्डुलिपि भेजने से पूर्व कृपया फोन पर संवाद अवश्य कर लें : 8595036445, 8595063206

संपर्क भाषा भारती के

साहित्यकारों/रचनाकारों से विशेष अनुरोध :

1. रचनाएँ केवल UNICODE फॉन्ट में ही भेजें।
2. रचनाओं को साधारण टाइप करके ही भेजें। उनमें कलाकारी दिखलाते हुए फूल/पत्ते न डालें।
3. रचनाओं को 'Justified' फॉर्मेट में ही भेजें, 'Left Aligned' में नहीं।
4. नया पैरा शुरू करते समय भी या तो कोई स्पेस नहीं छोड़ें और यदि छोड़ते हैं तो वह स्पेस पूरे आलेख में समान हो।
5. सभी रचनाओं का प्रूफ पढ़ कर, उन्हें दुरुस्त कर के ही भेजें।
6. अर्ध विराम, पूर्ण विराम, विस्मय, प्रश्नवाचक के पहले स्पेस नहीं दें, बाद में दें।
7. संवाद कोष्ठक शुरू करने से पहले स्पेस दें और कोष्ठक आरंभ करने के बाद स्पेस नहीं दें।
8. सभी रचनाएँ : samparkbhashabharati@gmail.com पर ही भेजी जाएँ। व्हाट्सेप पर भेजी गई रचनाएं, प्राप्त संदेशों के क्रम में पीछे चली जाती हैं अत: उनका संज्ञान लेना कठिन होता है। फोन : 8595036445, 8595063206
9. रचना के साथ अपना फोटो अवश्य संलग्न करें।

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : मोड़ पर ज़िंदगी
Author डॉ सत्या सिंह
ISBN : : 978-81-963524-3-1
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 118
Price : 250/-
Genre Poetry : कविता

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

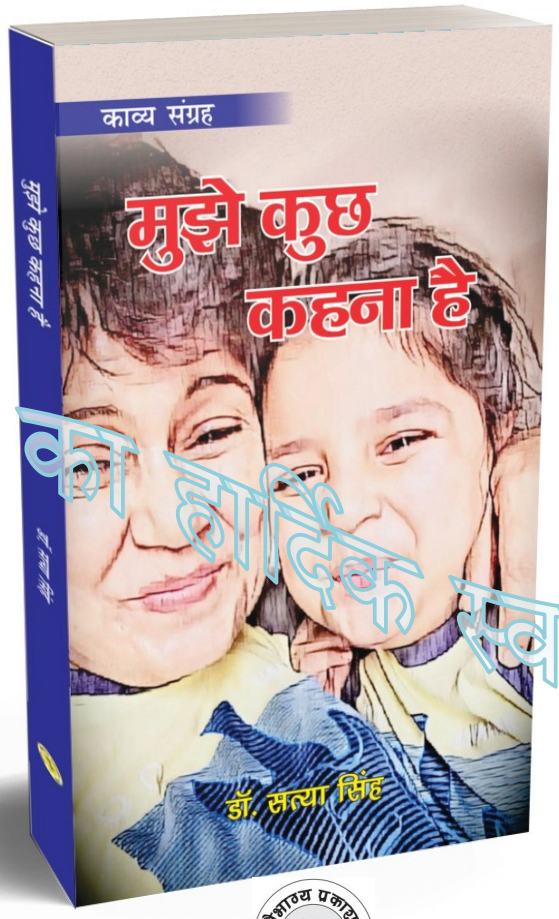

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : मुझे कुछ कहना है
Author डॉ सत्या सिंह
ISBN : : 978-81-963524-8-6
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 126
Price : 250/-
Genre Poetry : कविता

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

जौनपुर में घनश्यामपुरबाजार की यात्रा

शशिबिन्दु नारायण मिश्र

पाँच सदस्यीय 'कालेज- स्टाफ' के साथ कल 16. 03. 2023 को सड़क मार्ग से अकस्मात जौनपुर में बदलापुर तहसील के घनश्यामपुरबाजार जाना हुआ । उद्देश्य, कालेज के ही एक युवा शिक्षक सत्यम हलवाई के 58 वर्षीय पिता की असामयिक मृत्यु पर शोक-संतप्त परिवार को सांत्वना देने का था । यहाँ यह बता दें कि जौनपुर में हलवाई कुलोद्भव लोग अभिलेखों में भी अपने नाम के साथ हलवाई शब्द गर्व और शौक से लिखते हैं। सत्यम विद्यालयी अभिलेखों में भी 'सत्यम हलवाई' हैं। सत्यम के बाबा बजरंगी हलवाई ने यह स्पष्ट भी किया कि उनके यहाँ कोई भी नाम के साथ 'टाइटिल' के रूप में गुप्ता या मोदनवाल जैसी उपाधि नहीं लगाता है। हिन्दी प्रवक्ता हरिशरण पति त्रिपाठी की कार थी और वही गाड़ी चला रहे थे। कार में मेरे अलावा विज्ञान शिक्षक उग्रसेन कुमार नायक, अनाध्रिवेश पाण्डेय और प्रभात सिंह भी थे । यद्यपि मैं जाने की मनःस्थिति में हरगिज़ नहीं था, मैं 17 मार्च को अथवा 23 मार्च को ब्रह्मभोज के दिन जाना चाह रहा था, लेकिन हरिशरण पति त्रिपाठी और अनाध्रिवेश पाण्डेय के अतिशय स्नेहादरित आग्रह से मैं जाने के लिए विवश हो गया, जो उचित रहा। जब अनेक लोग साथ होते हैं, तो यात्राक्रम में अक्सर कुछ न कुछ चर्चाएँ - कुचर्चाएँ होती ही हैं, सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, पारिवारिक आदि बिंदुओं पर , हास-परिहास के क्षण भी आते हैं, इस दौरान तमाम अतीत की बातें भी उभर जाती हैं, इस यात्रा में आजमगढ़ से आगे बढ़ने पर विद्यालयी अतीत की एक चर्चा उभर गयी। प्रसंगवश, उसकी संक्षेप में चर्चा आवश्यक लग रही है :- मेरे यहाँ 12 वीं कक्षा की जनवरी 2023 के अन्तिम हफ्ते में भूगोल विषय की प्रयोगात्मक परीक्षा चल रही थी , परीक्षक के रूप में गोण्डा से भूगोल प्रवक्ता ज़ैनुलेद्दीन अहमद साहब पधारे थे, प्रयोगात्मक परीक्षा शुरू होने पर कालेज के अंग्रेजी विषय में विद्वान्

शिक्षक डॉ एख़लाक अहमद और मानदेय शिक्षक प्रदीप नारायण श्रीवास्तव भी परीक्षक के साथ सहयोग में बैठे। परीक्षार्थियों की भीड़ को देखते हुए मैं, मेरे साथ आलराउंडर शिक्षक श्रीधर मिश्र और हिन्दी प्रवक्ता हरिशरण पति त्रिपाठी भी परीक्षा कक्ष में गये थे , तब तक आधे से अधिक परीक्षार्थियों की प्रयोगात्मक परीक्षा सम्पन्न हो चुकी थी, वहाँ हम सब भी बैठे। कुछ देर बाद मानदेय शिक्षक प्रदीप नारायण श्रीवास्तव ने शबाना और शहनाज़ नाम की दो छात्राओं का नाम पुकारा, जो कि इस्लाम मतावलम्बी थीं । परीक्षक ने इनसे भूगोल विषय से सम्बन्धित सवाल पूछने के बाद क़ुरान की आयतों, रक़ूब और उर्दू वर्णों पर भी सवाल पूछे, इन छात्राओं ने क़ुरान से सम्बंधित सवालों का बड़ा ही संतोषजनक और संतुलित जवाब दिया। दोनों छात्राओं ने अनेक आयतों का सस्वर पाठ भी किया। यद्यपि मेरे विद्यालय में उर्दू या कुरान की पढ़ाई नहीं होती है,उन छात्राओं ने अपने घर पर स्वाध्याय द्वारा उर्दू या कुरान का ज्ञान अर्जित किया है। मुझे अच्छा लगा। परीक्षक भी उनसे काफ़ी प्रभावित हुए। वहाँ मैंने देखा कि कालेज के अंग्रेजी शिक्षक डॉ एख़लाक अहमद क़ुरआन और इस्लाम धर्म के बारे में अच्छी जानकारी रखते हैं।

मैं यह सब देख-सुनकर हतप्रभ रह गया था। बारहवीं कक्षा की सर्वाधिक तेज़ कही जाने वाली

शिवानी दुबे, स्मृति यादव व संजना यादव से जब श्रीमद्भगवद्गीता के बारे में पूछा तो संस्कृत पढ़ने वाली स्मृति यादव और संजना यादव ने गीता के बारे

कुछ बताया और "यदा-यदा हि धर्मस्य .....।" श्लोक सुनाया। मेरी हैरानी की कोई सीमा नहीं रही।

जहाँ तक मुझे लगा कि आधुनिक शिक्षा के साथ धार्मिक शिक्षा को परीक्षक कितना महत्त्व दे रहे हैं।

मैं भी व्यक्तिगत रूप से वर्तमान शिक्षा मे धार्मिक शिक्षा का पक्षधर हूँ। दूसरी तरफ अपने को हिन्दू धर्म के विद्वान् कहे जाने वाले लोग, चाहे धर्म के ठेकेदार हों, चाहे शिक्षक हों , हिन्दू हों , ब्राह्मण हों या हिन्दू होने का शान बघारने वाला अन्य कोई भी हो, श्रद्धा भाव से हिन्दू धर्म के पवित्र धर्म-ग्रंथ श्रीमद्भगवद्गीता के 04-06 श्लोक नहीं सुना सकते हैं । देश मे 90 फीसदी मुसलमानों के यहाँ क़ुरान अवश्य मिलेगी , लेकिन 90 फीसदी कुछेक हिन्दुओं (ब्राह्मणों के यहाँ विशेष रूप से) के यहाँ छोड़कर श्रीमद्भगवद्गीता कत्तई नहीं मिलेगी, गीता के श्लोक कण्ठस्थ होने की बात तो बहुत दूर की है। उस पर भी तुर्रा की वे ब्राह्मण हैं / हिन्दू हैं । बहुतेरे तो शिखा रखना, तिलक लगाना और जनेऊ धारण करना भी पाप समझते हैं, जो कि जीवन की वाह्य संज्ञाएँ हैं। यह बात दावे से कही जा सकती है कि मुसलमान सच्चे अर्थों में हिन्दुओं से कई गुना अधिक धार्मिक होते हैं । किसी का भी धार्मिक होना अच्छी बात है, लेकिन किसी की भी धार्मिकता जब कट्टरता में बदलकर दूसरे मतों / पंथों के लिए उग्र या हिंसक होने लगती है, तो वह पूरे समाज, देश, दुनिया और मानवता के लिए खतरा बन जाती है। जिस पर नियंत्रण आवश्यक हो जाता है।

सामान्यतः मुस्लिम अपने धर्म के प्रति आग्रही होते हैं, उनका इस्लाम धर्म उनके आचरण में दिखता है। दूसरी ओर हिन्दू मतावलंबी अत्याधुनिकता के नाम पर धर्म से विमुख होकर पागलपन की सारी सीमाएँ लाँघते हुए देखे जाते हैं।

आज़ादी के बाद देश में जो राजनीतिक / सामाजिक / धार्मिक / पारिवारिक आदि तमाम विसंगतियाँ पैदा हुईं हैं, उसके पीछे एकमात्र कारण देश का धर्मनिरपेक्ष होना , धर्म से विमुख होना और येन-केन-प्रकारेण वोट की राजनीति रही हैं। रास्ते में मन न ऊबे, अतः यह सब उपर्युक्त चर्चाएँ भी होती रहीं।

ऊपर कह आया हूँ कि मैं नास्तिक / अधार्मिक लोगों के साथ कभी भी यात्राएँ नहीं करता और न तो जाना पसन्द करता हूँ, भरसक अधार्मिक कोई व्यक्ति न पूछे तो और भी अच्छा है। इस यात्रा में भी साथ में कोई नास्तिक नहीं था और जिसके यहाँ जौनपुर में जाना था, अर्थात् सत्यम हलवाई भी सौ फीसदी भीतर से धार्मिक और आस्तिक हैं, उनके परिवार में भी धार्मिकता और आस्तिकता अव्वल दर्जे की है, इसकी पूरी जानकारी हमें पहले से ही थी । मई 2018 में ठीक इसी प्रकार एक शोक संतप्त परिवार को सांत्वना देने सिद्धार्थनगर जाना पड़ा था, साथ में विद्यालय के तत्कालीन लिपिक ठाकुर स्वर्गीय देवेन्द्र प्रसाद सिंह 'श्रीनेत', प्रदीप नारायण श्रीवास्तव, शशिमौल पाण्डेय तथा अभय प्रताप यादव आदि थे। ये सभी लोग भी धार्मिक और आस्तिक हैं।

किसी भी नास्तिक और अधार्मिक (ईशनिंदक , संस्कृति और धर्मविरोधी) के यहाँ किसी भी अवसर पर औपचारिकता निभाने न तो कभी गया हूँ और जाने के लिए सोच भी नहीं सकता। यहाँ यह स्पष्ट कर देना जरूरी है कि 'नास्तिक' शब्द पर हमारे यहाँ दो तरह की

शेष पृष्ठ 52 पर...

लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली-110092

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

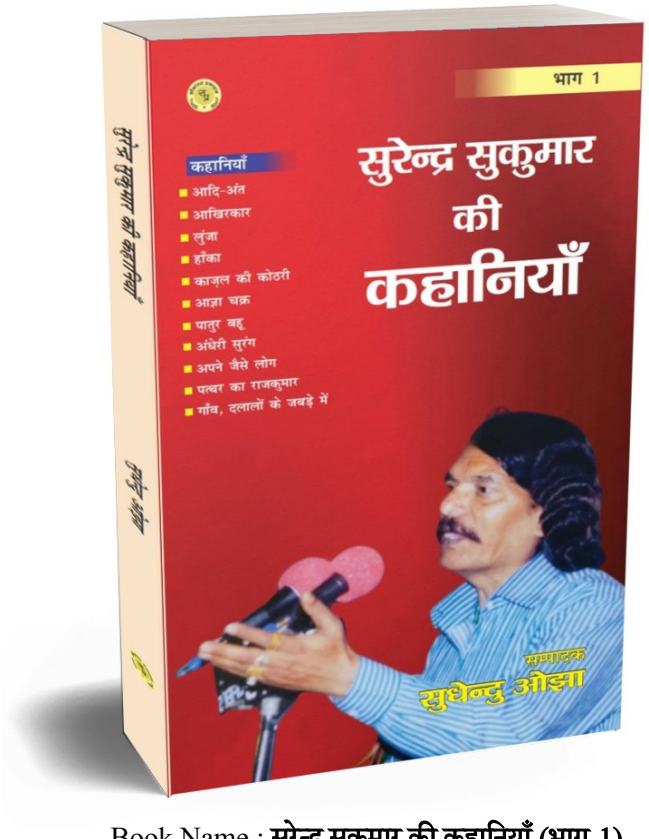

Book Name : **सुरेन्द्र सुकुमार की कहानियाँ (भाग-1)**
Editor : सुधेन्दु ओझा
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Price : 250/-
Genre Prose

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

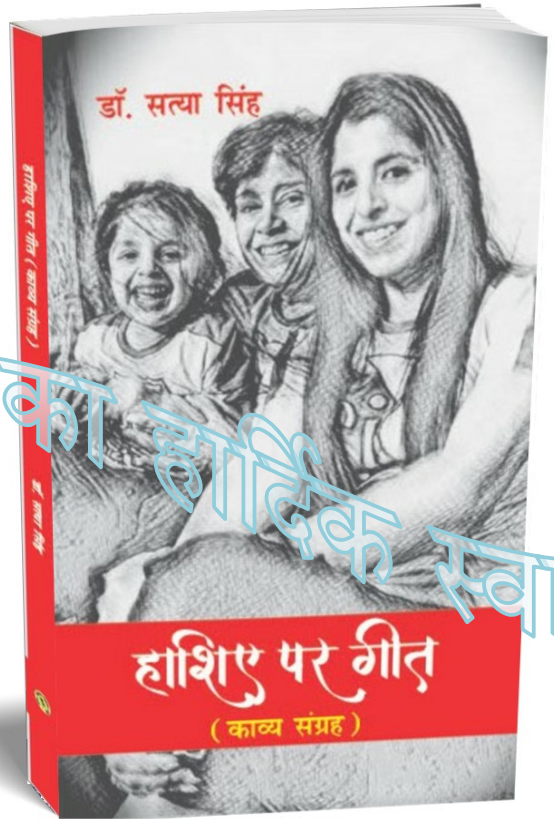

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : हाशिए पर गीत
Author डॉ सत्या सिंह
ISBN : 978-81-963524-7-9
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 120
Price : 250/-
Genre Poetry : कविता

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

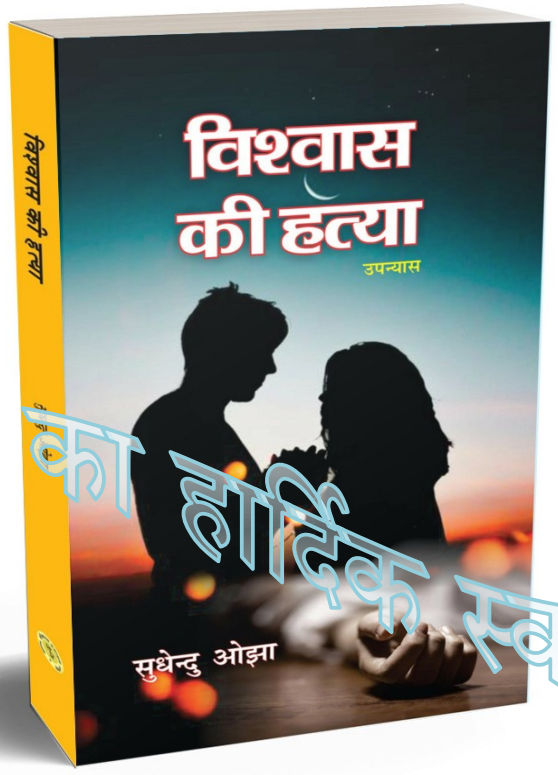

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : **विश्वास की हत्या (उपन्यास)**
Author : सुधेन्दु ओझा
ISBN : : **978-81-964179-8-7**
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 198
Price : 200/-
Genre Prose : गद्य (उपन्यास)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

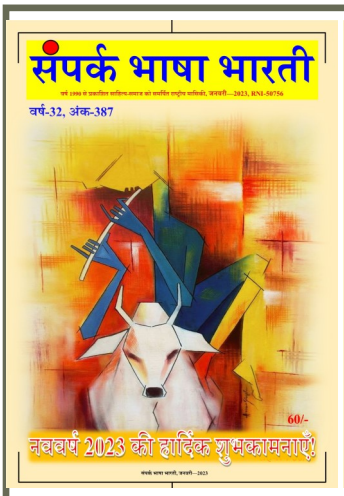

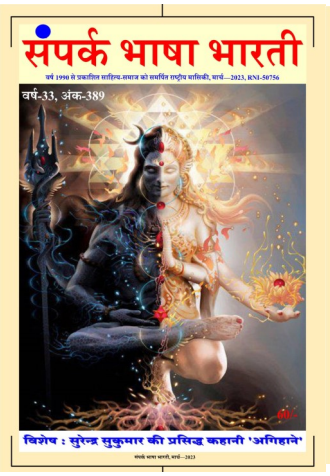

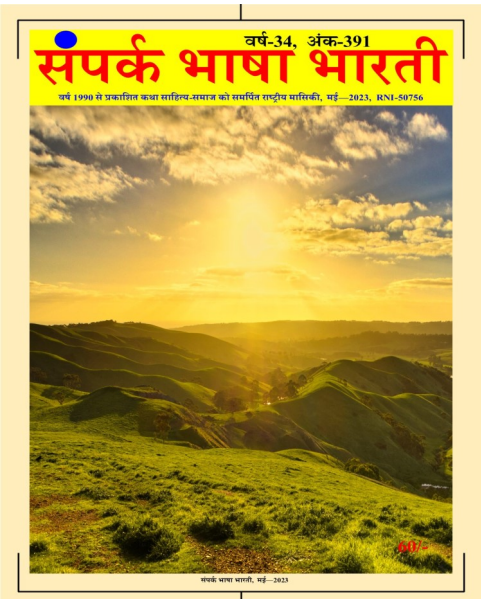

पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा।

पुस्तक समीक्षा के लिए समीक्षार्थ पुस्तक की प्रति भेजना अनिवार्य है।

प्रधान कार्यालय : ग्राम-मकरी, पोस्ट-भुइंदहा, पृथ्वीगंज हवाई अड्डा, प्रतापगढ़-230304 उत्तर प्रदेश
नई दिल्ली कार्यालय : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092

पत्रव्यवहार तथा पुस्तक भेजने का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092
फोन नंबर : 9868108713/7701960982
ईमेल : samparkbhashabharati@gmail.com

संपर्क भाषा भारती

संपादकीय परिवार

मुख्य संपादक : सुधेन्दु ओझा

प्रधान कार्यालय : ग्राम-मकरी, पोस्ट-भुइंदहा, पृथ्वीगंज हवाई अड्डा, प्रतापगढ़-230304 उत्तर प्रदेश

नई दिल्ली कार्यालय : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092

पत्रव्यवहार तथा पुस्तक भेजने का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092

फोन नंबर : 9868108713/7701960982

ईमेल : samparkbhashabharati@gmail.com

क्षेत्रीय कार्यालय

अंजना सवि छलोत्रे : वृन्दा, मासिक पत्रिका: सम्पादन

जी-48, फॉर्च्यून ग्लोरी, ई-8, एक्सटेंशन, भोपाल-462039 मध्य प्रदेश

फोन नंबर : 8461912125

ईमेल : anjana.savi@gmail.com

संपर्क भाषा भारती क्षेत्रीय कार्यालय के रूप में संबद्धता के लिए पत्रिकाओं का स्वागत है...

आप अपनी रचनाएँ,

गोष्ठी/सम्मान समारोह संबंधी सूचना फोटो सहित

स्वयं www.newzlens.in पर सब्मिट कर सकते हैं ...

सभी पत्रिकाएँ डाऊनलोड के लिए www.newzlens.in पर उपलब्ध हैं...

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

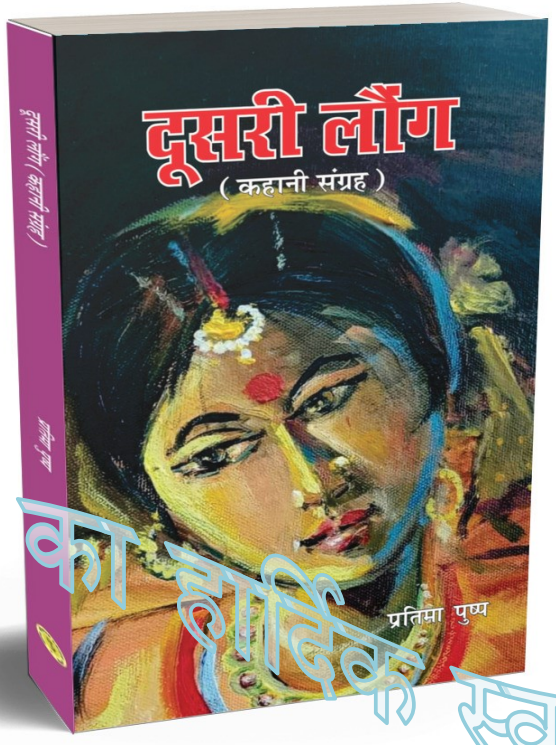

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : दूसरी लौंग (कहानी सांग्रह)
Author प्रतिमा 'पुष्प'
ISBN : : 978-81-963524-2-4
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 134
Price : 250/-
Genre Prose : गद्य (कहानी संग्रह)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

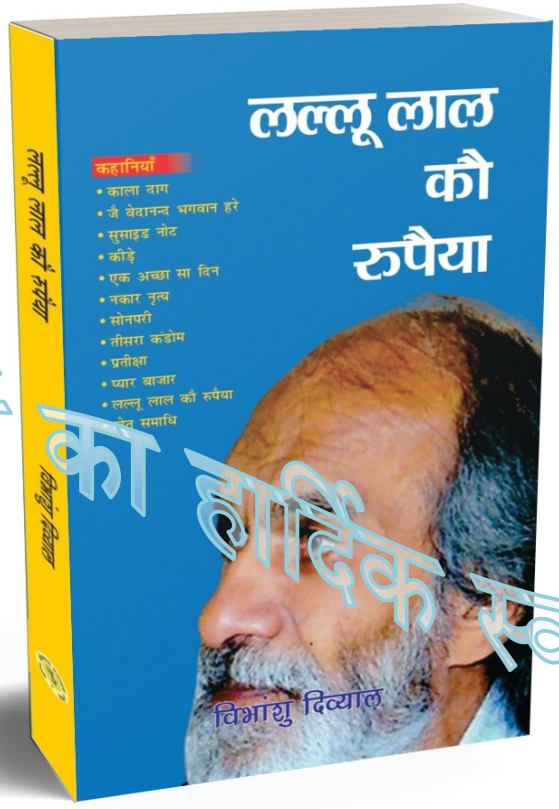

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : लल्लू लाल कौ रुपैया (कहानी सांग्रह)
Author विभांशु दिव्याल
ISBN : : 978-81-964179-3-2
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 190
Price : 350/-
Genre Prose : गद्य (कहानी संग्रह)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

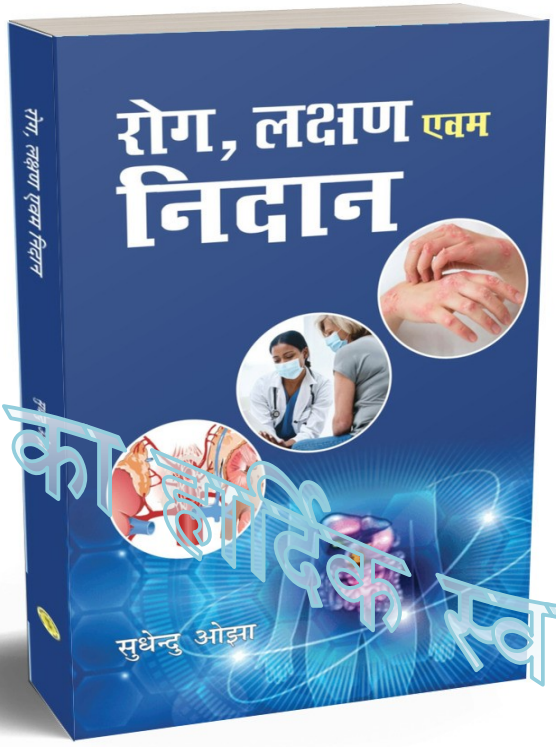

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : रोग, लक्षण एवम निदान
Author : सुधेन्दु ओझा
ISBN : : 978-81-958985-7-2
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 190
Price : 150/-
Genre Prose : गद्य (चिकित्सा)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : **प्रतापगढ़ न्यूज़ (उपन्यास)**
Author : सुधेन्दु ओझा
ISBN : **978-81-964179-7-0**
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 154
Price : 200/-
Genre Prose : गद्य (उपन्यास)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

पृष्ठ 41 का शेष...

अवधारणाएँ काम करती हैं, एक तो जो सामान्य विचारधारा में ईश्वर को न मानने वाले लोग हैं और दूसरा चार्वाक दर्शन की नास्तिकता के बारे में कुछ अलग अवधारणाएँ हैं, जो वेद-निंदकों को नास्तिकता से जोड़ती हैं , जो कि कुछ तथाकथित विद्वानों या महामूर्खों द्वारा बहुत ही विद्रूप तरीके से यदा-कदा सोशल मीडिया पर प्रस्तुत किया - कराया जाता है , जिसकी अधिकांश बातें फ़िज़ूल, अशोभनीय , आधारहीन और केवल कुतर्क की श्रेणी में आती हैं, सामाजिक विद्वेष फैलाने वाली होती हैं।

बिशुनपुरा से करीब 11 बजे पूर्वाह्न जौनपुर के लिए प्रस्थान करने पर अनाध्रिवेश पाण्डेय ने फ़ोन पर सत्यम जी से बताया कि हम फलाँ-फलाँ लोग आपके यहाँ आज आ रहे हैं , फ़ोन पर अनाध्रिवेश के आने को लेकर सत्यम को विश्वास तो हुआ, पर अन्यों पर पूरा यकीन नहीं हुआ। सत्यम धार्मिक हैं , उनका पूरा परिवार भी, लेकिन सत्यम धर्मांध कत्तई नहीं हैं, धर्मांध मैं भी नहीं हूँ। धर्मांधता से मुझे व्यक्तिगत रूप से बहुत चिढ़ है, धर्म और धार्मिक कार्यकलापों का प्रदर्शन मुझे पाषण्ड लगता है।

मुझे अपने यहाँ पाकर सत्यम चकित रह गए थे, क्योंकि मैं बहुत कम जगहों पर जाता हूँ, कम रिश्ते रखता हूँ, बस उतना ही जितने में जीवन्तता बनी रहे, हरिशरणपति त्रिपाठी और उग्रसेनकुमार नायक को भी देखकर सत्यम उतने ही आह्लादित हुए।

सत्यम ने भावुक होते हुए अपने को सम्भाल कर कहा कि - "लगता है कि अपने यहाँ आप सबको देखकर मैं स्वप्न देख रहा हूँ कि आप लोग मेरे घर आये हैं। उनकी आँखों में आँसू थे, पीड़ा के साथ अन्तर्मन से आह्लाद के भी आँसू , हम सभी को अपने पैतृक घर पर देखकर। सत्यम ने अपनी माँ , भाइयों, चाचा, अपनी बेटी , मौँसी और अपने बाबा बजरंगी हलवाई (पितामह) से भावुक होकर मिलवाया, परिचय कराया।

सत्यम के 80 वर्षीय बाबा , चाचा, भाई, मौँसी आदि से बातचीत कर लग रहा था , कि निश्चित तौर पर उनका तात्कालिक दुःख कुछ कम हुआ है। सत्यम को भी लग रहा था कि हम सब उनकी पीड़ा कुछ हद तक कम कर पा रहे हैं। सत्यम के वृद्ध बाबा बजरंगी ने काफ़ी बातें की, बातचीत के दरम्यान जब वे कुछ हल्के हुए तो उन्होंने कहा कि हमारे घर में कोई भी मांस - मछली -अंडा - शराब आदि का कभी भी सेवन नहीं करता है, "बाबू ! सत्यम पहली बार घर से बहुत दूर नौकरी करने गये हैं, बाहर वे कैसे रहते हैं, मैं नहीं जानता, लेकिन वे घर पर यह सब नहीं खाते-पीते हैं।"

सत्यम के बुजुर्ग बाबा की सत्यम के प्रति इस ईमानदारी और

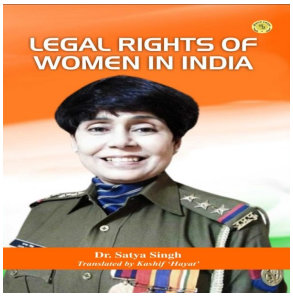

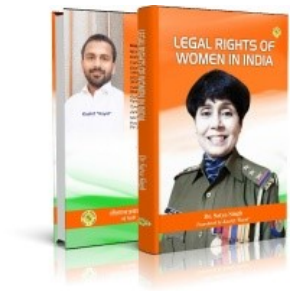

Legal Rights of Women in India

By Dr. Satya Singh

Price : Rs. 250/-

Pages :120

Paperback

यह FLIPKART पर उपलब्ध है .....

गूगल-पे (9868108713) माध्यम से मंगाने पर कूरियर चार्ज का भुगतान प्रकाशक द्वारा किया जाएगा।

सौभाग्य प्रकाशन

कार्यालय : 495/2, द्वितीय तल, गणेश नगर-2, शकरपुर, नई दिल्ली-110092

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

सरलता पर हम रीझ उठे। तब उनके परिवार के विगत 50-60 वर्षों से अनवरत प्रगति पथ पर सरपट दौड़ने और वहाँ के समाज में प्रतिष्ठित होने का कारण समझ में आया। सत्यम को भी अपने बाबा और अपनी माँ के प्रति दृढ़तापूर्वक सौ फीसदी ईमानदार रहना चाहिए। सत्यम के बाबा ने सत्यम के तीनों भाइयों का नाम क्रमशः सत्यम, शिवम और सुंदरम रखा है। सत्यम की माँ की चेहरे की उदासी गहरे तक प्रभावित की , वह कुछ भी बोल नहीं सकीं। 55-60 वर्ष की उम्र मे और उसके बाद की उम्र मे भी दाम्पत्य जीवन मे बौद्धिक रूप से परिपक्व हो रहे पुरष को पत्नी की और पत्नी को पति की अधिक जरूरत महसूस होती है। उस उम्र के बाद के हर अनुभवी की यही राय है।

यह जरूरत केवल सहवास सुख के लिए नहीं बल्कि मन की बात को एक दूसरे से साझा करने के लिए होती है। इस उम्र मे परस्पर कई बार किंकर्तव्यविमूढ़ होने के समय पत्नी अपने पति के लिए मार्गदर्शक की भूमिका मे भी देखी जा सकती है। पत्नियाँ भी इस उम्र में अधिक से अधिक पति-प्रेमी का सानिध्य पाना चाहती हैं। मैं उनकी बात नहीं करता जो यौवन से विरस हो जाने के बाद 50-55 में या उसके बाद पहली बार विवाह करते हैं।यह तो एक अलग प्रकार की यातना का आमंत्रण है।

55- 60 वर्ष के बीच में पति-पत्नी में से किसी एक का सदा के लिए यदि विछोह होता है, तो वह दुःख असहनीय और कारुणिक हो जाता है, यह सब हम प्रत्यक्ष देख रहे थे।

बहरहाल आप किसी के साथ संवेदना के धरातल पर ईमानदारी से कुछ समय व्यतीत कर रहे हैं, तो दुःखी व्यक्ति के मन का बोझ कुछ न कुछ हल्का हो ही जाता है।

लगभग दो घण्टे का समय हम सबने उनके और उनके परिवार के साथ बिताए, विदा होने से पहले सत्यम उन शिक्षण संस्थानों में भी ले गये,जहाँ उन्होंने प्रारम्भिक, छठवीं से इण्टर तक और स्नातक की पढ़ाई की थी।

वहाँ का चित्र उन्होंने यादगार के लिए स्वयं खिंचवाया और प्रेषित किया, शेष चित्र विज्ञान शिक्षक उग्रसेनकुमार नायक जी ने उपलब्ध कराया। लौटते समय हम सब इस बात पर एकमत थे, कि हमने सही समय पर सही निर्णय लिया था। लौटते समय हम सबके दिलों में सुकून था, शान्ति थी। मनुष्य को संवेदना के धरातल पर सदैव उर्वर रहना चाहिए। सन्तों की यह मान्यता है कि ईश्वर ने किसी के हृदय का दुःख कम करने के लिए यदि आपको उपयुक्त पात्र बनाकर प्रस्तुत किया है, तो आप निश्चित रूप से भाग्यशाली हैं और यह एक प्रकार की मानव सेवा ही है। सर्वे भवन्तु सुखिनः .....।

आपकी अपनी साहित्यिक पत्रिका

संपर्क भाषा भारती

samparkbhashabharati@gmail.com

वर्ष 1990 से नई दिल्ली से प्रकाशित
साहित्य-समाज को समर्पित राष्ट्रीय मासिकी,
मई–2024, RNI-50756
वर्ष-33, अंक-402 मूल्य 150/-

हिन्दी पट्टी में मोदी विरोध के स्वर...